25/-₹

हिन्दी साप्ताहिक

विश्वकर्मा किरण

वर्ष-18 अंक-41 जौनपुर 7 नवम्बर, 2017 http://www.vishwakarmakiran.com

नमामि गंगे अभियान के लिये एक करोड़

कुलरिया परिवार का योगदान

समाज से सरकार तक

फलोदी में सुथार छात्रावास निर्माण के लिये भी दिया 51 लाख

COLLEGE CODE 2676

www.drprvishwakarmaiti.com

ISO 9001-2015 Certified

NCVT भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

डा० पाँचू राम विश्वकर्मा आई०टी०आई०

पड़रच्छाकोट, डोभी, जौनपुर (उ०प्र०)

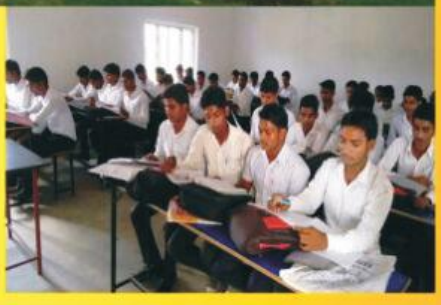

ट्रेड

* इलेक्ट्रीशियन
* फिटर

प्रबन्ध समिति

Dr.P.R.Vishwakarma
M.Sc.(Math), Phd.

Nanhku Ram Vishwakarma
M.Sc., B.Ed.

Tribhuwan Vishwakarma
M.A.

Pawan Vishwakarma
B.E., M.Tech.

Anjani Vishwakarma
B.Sc., PGDCA, MBA

Mob.No. 7309062004 , 7860222714

R.N.I. No.- UPHIN/2000/01157
विश्वकर्मा किरण
हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका

वर्ष- 18 अंक- 41
जौनपुर, 7 नवम्बर, 2017
पृष्ठः 32 मूल्यः 25/- रूपया

प्रेरक
रघबीर सिंह जांगड़ा
मो0: 9416332222
*****
सम्पादक
कमलेश प्रताप विश्वकर्मा
मो0: 9454619328
*****
सह सम्पादक
विजय कुमार विश्वकर्मा
मो0: 8763834009
*****
समन्वय सम्पादक
शिवलाल सुथार
मो0: 8424846141
*****
जौनपुर ब्यूरो
संजय विश्वकर्मा
मो0: 9415273179

-:सम्पर्क एवं प्रसार कार्यालयः-
ई-1/351, विनयखण्ड, गोमतीनगर
लखनऊ। 226010

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक कमलेश प्रताप विश्वकर्मा द्वारा अजन्ता प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, अहमद काम्प्लेक्स, गुईन रोड, अमीनाबाद, लखनऊ से मुद्रित एवं 98, नारायण निवास, नखास, सदर, जौनपुर से प्रकाशित।
सम्पादक- कमलेश प्रताप विश्वकर्मा

website: www.vishwakarmakiran.com
E-mail: news@vishwakarmakiran.com

-:मुख्य संरक्षकः-
विश्वकर्मा जागरूकता मिशन

सम्पादकीय...

कमलेश प्रताप विश्वकर्मा

अहंकार का त्याग करें

यदि हम वास्तव में समाज सेवा कर रहे हैं तो हमें अहंकार का त्याग करना होगा। हम उम्र में कितने ही बड़े क्यों न हों, हम आर्थिक रूप से कितने ही सक्षम क्यों न हों, हमारे पास संसाधनों की भरमार क्यों न हो, यदि हम सामाजिक कार्य में जुड़े हैं तो हमें अपनी उन सभी चीजों का यूं कहें अहंकार का त्याग करना ही पड़ेगा। त्याग का मतलब सिर्फ उन चीजों का वैचारिक त्याग से है। जब तक हम समाज के कमजोर तबके के लोगों के बीच यह नहीं साबित करते कि 'मेरे पास सब कुछ होते हुये भी आपके समकक्ष हूं', तब तक लोगों का जुड़ाव आत्मीय रूप से नहीं होगा। निचले पायदान के लोगों, आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के दिमाग में हमेशा यह बात गूंजती रहती है कि अमुक तो बड़ा आदमी है, उसके पास पैसों की खान है भला मैं उससे कैसे जुड़ पाऊंगा। उसका यह सोचना भी गलत नहीं है, क्योंकि वर्तमान परिवेश में यह हावी है। समाज में अक्सर देखने को मिलता है कि आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति किसी संगठन का अध्यक्ष है, उस संगठन का कोई पदाधिकारी यथा उपाध्यक्ष, महासचिव, सचिव आदि में से कोई आर्थिक सम्पन्न है तो वह अपनी सम्पन्नता के आगे अध्यक्ष को कुछ नहीं समझता। अध्यक्ष की क्या गरिमा है, उसे भंग करने में भी मिनट मात्र का समय लगता है। मैनें तो स्वयं संस्था के सचिव द्वारा अध्यक्ष को आदेश देते हुये प्रत्यक्ष देखा है। अध्यक्ष भी उस सचिव के आदेश को सहर्ष इसलिये स्वीकार करता है कि संस्था का ज्यादातर खर्च आर्थिक रूप से सम्पन्न वह सचिव ही वहन करता है। अध्यक्ष, सचिव के आदेश को मान तो लेता है पर मन की खिन्नता बरकरार रहती है। उसे इस बात का आभास है कि यदि मैं भी आर्थिक रूप से सक्षम होता तो यह मुझे आदेश नहीं देता।

संगठन के पदाधिकारियों और सदस्यों में संस्कार, शिष्टाचार और अनुशासन होना चाहिये। यदि कोई व्यक्ति संस्था का अध्यक्ष है, वह भले ही आर्थिक रूप से कमजोर है फिर भी हमें उसके साथ अध्यक्ष की गरिमा के अनुरूप व्यवहार करना चाहिये। सही बात तो यह है कि आर्थिक कमजोर व्यक्ति ही समाज के बीच ज्यादा समय दे पाता है और सक्षम व्यक्ति कभी-कभार। हां, कुछ ऐसे सक्षम लोग हैं जिनका व्यवसाय या प्रतिष्ठान बिना उनकी मौजूदगी में ठीक चल रहा है तो वह भी समाज के बीच काफी समय देते हैं। ऐसे लोग काफी संस्कारित व व्यवहारिक होते हैं, वह लोगों का सम्मान करना जानते हैं। कमी तो उन लोगों में है जो सिर्फ दिखावे के लिये आते हैं, उनमें न तो संस्कार होता है और न अनुशासन। वह लोग अपने को बहुत बड़ी हस्ती के रूप में शुमार करने में लगे रहते हैं। हम अपनी बात ऐसे ही लोगों तक पहुंचाना चाहते हैं। यदि वास्तव में समाज के बीच काम करना है, मन में समाजसेवा की भावना है तो अपने अहं को त्यागकर, दिखावे को त्यागकर, वास्तविक भूमिका में आकर समाज को एकजुटता की राह पर ले चलें।

नमामि गंगे अभियान के लिये कुलरिया परिवार की तरफ से एक करोड़

भागवत कथा में पधारे उत्तराखण्ड के मुख्यमन्त्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत के सामने घोषणा

ऋषिकेश। ब्रह्मलीन संत दुलाराम कुलरिया परिवार ने नदियों को निर्मल बनाने की योजना में उत्तराखण्ड सरकार को एक करोड़ रुपये का योगदान किया है। इस मौके पर उत्तराखण्ड के मुख्यमन्त्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत स्वयं उपस्थित रहे।

ऋषिकेश में आयोजित संत दुलाराम कुलरिया की पुण्य स्मृति में रामप्यारी देवी कुलरिया की प्रेरणा से 5 अक्टूबर से 12 अक्टूबर तक भागवत कथा का आयोजन किया गया। इस भागवत कथा में कथावाचक महत्व 1008 क्षमा राम जी महाराज द्वारा कथा का वाचन किया गया। कथा का आयोजन संत श्री दुलाराम जी कुलरिया फाउण्डेशन ट्रस्ट के मुख्य भंवर कुलरिया, नरसी कुलरिया व पूनम कुलरिया द्वारा किया गया। तीनों भाइयों ने मां गंगा की सफाई अभियान के लिए एक करोड़ रूपये उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत को दिये। कथा में हजारों की तादाद में श्रद्धालु पहुंचे। वहां पर रहने व खाने की उचित व्यवस्था की गई थी।

महन्थ क्षमाराम जी ने अपनी कथा में कहा कि- भगवानकी बनाई प्रत्येक वस्तु से प्रेम ही भगवान से प्रेम है। भगवान कोई वस्तु नहीं है, कोई पदार्थ भी नहीं है। ईश्वर तो केवल अनुभूति का विषय है। भगवान की अनुभूति पाने के लिए मन में वेदना हो, नीति और विचार श्रेष्ठ हो, दृढ़ विश्वास हो और संकल्प के साथ मन लगाते ही भगवान की कृपा का ज्ञान हो जाएगा। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार छोटा बच्चा माता-पिता द्वारा दी हुई वस्तु को पुनः उन्हें देता है तो कितनी खुशी होती है, ठीक उसी प्रकार भगवान का दिया हुआ भगवान को समर्पित करने से भगवान भी प्रसन्न होते हैं। जिस प्रकार गंदगी में इत्र छिड़कने से कोई लाभ नहीं होता, ठीक उसी प्रकार पहले अपने हृदय को स्वच्छ बनाने, किसी के प्रति भी ईर्ष्या द्वेष न रखने पर ही कथा सुनने का लाभ मिलता है। परमार्थ निकेतन आश्रम के प्रमुख चिदानंद जी सरस्वती महाराज ने भी कथा वाचन किया।

इस कथा में उत्तराखण्ड के मुख्यमन्त्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत, पतंजलि योग विद्यापीठ के प्रमुख बालकृष्ण आचार्य, उत्तराखण्ड के पर्यटन मन्त्री संत सतपाल जी महाराज, गौसेवी पदमाराम कुलरिया, उगमाराम कुलरिया, मघाराम कुलरिया, धर्म कुलरिया, चिमाराम कुलरिया, जांगिड़ समाज के बिल्डर लीलाराम जांगिड़, अमराराम दुबई, पुखराज पाराशर, जगदीश जांगिड़, सूरजमल, विशनाराम चूर्ण, शिवजी कलाकार, हीरालाल माकड़, दीपाराम चौधरी, हरीलराम महाकाल, दीपक खोखा, मुन्नीलाल, हनुमान, बालाजी (न्यायिक मजिस्ट्रेट), रमेश कानाराम, बालाजी, भैरव सुथार, परमेश्वर सुथार, दीपक, जगदीश, गोपी नरेन्द्र नगर, सुखदेव, राजेश, अशोक, सुखदेव, मोहित,

भागवत कथा में संचालन करते हुये युवा उद्घोषक एंकर तिलोक एस सुथार

जनक, अभिषेक, मोहित आदि गणमान्य उपस्थित रहे। इन सभी का भंवर कुलरिया, नरसी कुलरिया व पूनम कुलरिया के नेतृत्व में कुलरिया परिवार के द्वारा स्वागत-अभिनंदन किया गया। भागवत कथा में सम्पूर्ण कुलरिया परिवार उपस्थित रहा।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का मंच संचालन प्रदीप माकड़ सुथार मुंबई और युवा उद्घोषक एंकर तिलोक एस सुथार बाड़मेर द्वारा किया गया।

शुभकामनाएं-

देशकी सबसे पवित्र नदी गंगा की सफाई के लिए एक करोड़ रुपये देने की घोषणा पर राजस्थान के पूर्व मुख्यमन्त्री अशोक गहलोत ने कुलरिया परिवार को शुभकामनाएं दी है। उन्होंने इस सम्बन्ध में कुलरिया परिवार को पत्र लिखकर संत दुलाराम कुलरिया की स्मृति में किए गये इस परोपकार के लिए उनका धन्यवाद ज्ञापित किया है। उन्होंने कहा कि इससे देश के अन्य भामाशाह भी प्रेरित होंगे। अपने परिजनों को श्रद्धासुमन अर्पित करने का इससे अच्छा कार्य और कोई हो ही नहीं सकता।

कई और बड़ी हस्तियों, समाजसेवियों व राजनीतिक व्यक्तियों ने भी कुलरिया परिवार की प्रशंसा की है।

सुथार छात्रावास निर्माण हेतु कुलरिया परिवार ने दिया 51 लाख

फलोदी में श्री विश्वकर्मा सुथार समाज का शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न

जोधपुर। फलोदी में सुथार समाज का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया, जिसमें कुलरिया परिवार सिलवा ने 51 लाख रुपए की सहयोग राशि छात्रावास निर्माण हेतु भेंट किया। समारोह में गौ सेवी पदमाराम कुलरिया, उगमा राम कुलरिया, देव किशन कुलरिया, मगाराम कुलरिया और स्वर्गीय संत दुलाराम कुलरिया के सुपुत्र भंवर कुलरिया, नरसी कुलरिया, पूनम कुलरिया और गौ सेवी पदमाराम कुलरिया के सुपुत्र कानाराम कुलरिया, शंकर कुलरिया, धर्म कुलरिया मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

कुलरिया परिवार ने शिक्षा की महती भूमिका को समझते हुए छात्रावास के निर्माण हेतु 51 लाख रुपये की सहयोग राशि फलोदी सुथार समाज के अध्यक्ष हीरालाल आसदेव को सप्रेम भेंट की। गौ सेवी पदमा राम कुलरिया ने अपने उद्बोधन में कहा कि, समाज एकजुट होकर सफलता के नए आयाम छुए है और सभी को साथ में मिलकर समाज को आगे ले जाना है। इंटीरियर आइकॉन नरसी कुलरिया ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज अपना समाज नई ऊंचाइयों को छू रहा है। हमें एकजुट होकर समाज को नई दिशा देनी है, सभी को साथ में मिलजुल कर समाज को आगे ले जाना है। समाज के प्रति हम निपुण भाव से अपनी सेवाएं दे रहे हैं और समाज शिक्षा के क्षेत्र में भी आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि हमारे लायक कोई भी सेवा हो कुलरिया परिवार के द्वार 24 घंटे खुले हैं।

संत श्री दुलाराम जी कुलरिया फाउण्डेशन ट्रस्ट की ओर से 5 अक्टूबर से लगाकर 12 अक्टूबर तक ऋषिकेश में भागवत कथा आयोजित की गई जिसमें संत जी के सुपुत्र भंवर कुलरिया, नरसी कुलरिया व पूनम कुलरिया ने मां गंगा की सफाई अभियान के लिए एक करोड रुपए सहयोग राशि दिया है, उसके लिए फलोदी सुथार समाज ने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

शपथ ग्रहण समारोह की अध्यक्षता कर रहे अमरा राम चोयल ने कहा कि, समाज उन्नति की ओर बढ़ चुका है। हमारे समाज ने सिर्फ भारत में ही नहीं विदेशों में भी परचम लहराया है। इस कार्यक्रम में समाज की कई महान विभूतियां शामिल हुईं, जिसमें हीरालाल माकड़, बालाजी, पुनाराम बरनेला, प्रेमसुख शर्मा, एम0डी0 शर्मा, रमेशचंद्र शर्मा, मोहन जायसवाल प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

संपूर्ण कार्यक्रम का मंच संचालन युवा उद्बोषक एंकर तिलोक एस सुथार बाड़मेर और मदन जी सुथार द्वारा किया गया।

बेटी फाउण्डेशन ने जांगिड़ फाउण्डेशन के साथ मिलकर किया 50 विभूतियों का सम्मान

इस अवसर पर सांसद रामचरण बोहरा ने कहा कि, आज जिस प्रकार बेटियां अपने अथक परिश्रम से समाज में उन्नति पथ पर आगे बढ़ रही हैं, उन्हें अधिक प्रोत्साहन की आवशयकता है। समाज में बेटियों को तरक्की के समान अवसर प्रदान कर हम अपना भविष्य संवार सकते हैं

जयपुर। बेटी फाउण्डेशन की ओर से मानसरोवर स्थित माइनिंग इंजीनियर्स ऑडिटोरियम में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ थीम पर सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में समाज के उत्थान में उल्लेखनीय कार्य करने वाली विभूतियों को 'आरसीएफएस एक्सिलेंस अवार्ड 2017' से सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि जयपुर शहर के सांसद रामचरण बोहरा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता जयपुर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के डायरेक्टर रवि गोयल ने की।

सर्वप्रथम बेटी फाउण्डेशन के डायरेक्टर राज शर्मा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर सांसद रामचरण बोहरा ने कहा कि, आज जिस प्रकार बेटियां अपने अथक परिश्रम से समाज में उन्नति पथ पर आगे बढ़ रही हैं, उन्हें अधिक प्रोत्साहन की आवशयकता है। समाज में बेटियों को तरक्की के समान अवसर प्रदान कर हम अपना भविष्य संवार सकते हैं। नवरात्र में जब चंहुओर कन्याओं की पूजा की जा रही है, वहीं ऐसे समय में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ थीम पर आयोजित इस समारोह के आयोजन का महत्व और बढ़ जाता है।

सम्मान समारोह में जिन 50 हस्तियों को 'आरसीएफएस एक्सिलेंस अवार्ड 2017' से सम्मानित किया गया उनमें राजस्थान की टूरिज्म एम्बेसेडर डॉ0 खुशबू कपूर, इंटीरियर डिजाइनर विजय मान, शिक्षाविद कुंवर कनक सिंह, जांगिड़ फाउण्डेशन के अध्यक्ष राजेश शर्मा (जांगिड़), जांगिड़ फाउण्डेशन के सचिव एवं कार्यक्रम संयोजक विक्रम जांगिड़, विश्वकर्मा राजनैतिक उत्थान मंच के महामंत्री गीतेश जांगिड़, गणेश मल सुथार, भारती शर्मा, राजस्थानी फिल्म अभिनेता राज जांगिड़, शोभराज, कीर्ति सक्सेना आदि प्रमुख रूप से शामिल हैं।

समाज में बदलाव के लिए शिक्षा के संकल्प के साथ आगे आएं बेटियां : डॉ0 जसवन्त

अलवर। श्रम एवं नियोजन विभाग मन्त्री डॉ0 जसवंत सिंह यादव ने बेटियों से आह्वान किया कि वे संकल्प लें कि इतनी काबिल बनेंगी कि अपनी सुरक्षा के साथ समाज की रक्षा भी करेंगी। डॉ0 यादव अलवर जिले के बहरोड़ की भगवाड़ी कला में स्थित महाराजा पी0जी0 महिला महाविद्यालय में जांगिड फाउण्डेशन के तत्वाधान में आयोजित 'सशक्त नारी-सशक्त भारत' की थीम पर महिला आत्मसुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि समाज में बदलाव शिक्षित बेटी ही ला सकती है। इसके लिए प्रत्येक बेटी को प्रतिबद्धता के साथ शिक्षा ग्रहण करनी होगी। देश के प्रधानमंत्री ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना शुरू कर देश में बेटियों के प्रति नई चेतना का संचार किया है। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली बेटियों एव अन्य प्रतिभाओं को प्रतीक चिन्ह भेट कर सम्मानित किया।

महिला अधिकारिता विभाग के सहायक निदेशक ऋषिराज सिंगल ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना की विस्तार से जानकारी देते हुए बेटियों की सुरक्षा के लिए उपलब्ध कानूनों की भी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बेटियां दुर्व्यवहार को सहन नहीं करें, बल्कि मजबूती के साथ विरोध करें। उन्होंने सामाजिक परम्पराओं को बेटी के जन्म से जोड़ने का आह्वान करते हुए कहा कि बेटी के जन्म पर थाली बजवाएं और मंगल गीत गाकर उन्हें समानता का दर्जा प्रदान करें।

कार्यक्रम में केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के महाराणा प्रताप क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र अन्नतपुरा तथा दिल्ली पुलिस के प्रशिक्षकों ने बेटियों को आत्मसुरक्षा का प्रशिक्षण प्रदान किया। जांगिड़ फाउण्डेशन के चेयरमैन राजेश शर्मा ने आभार जताया। इस अवसर पर जांगिड़ फाउण्डेशन के सचिव विक्रम जांगिड़, महाविद्यालय के चेयरमैन महावीर सिंह, जिला पार्षद देशराज खरेरा, जांगिड़ फाउण्डेशन महेश जांगिड़, सुमन डागर एवं अशोक चुग सहित कई लोग मौजूद थे।

जांगिड़ ब्राह्मण सभा द्वारा प्रतिभाओं का सम्मान

अजमेर। अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा, अजमेर शाखा द्वारा वरिष्ठ जनों एवं प्रतिभाशाली छात्रों का सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समित शर्मा (आईएएस) थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में राजेश शर्मा (जांगिड़) चेयरमैन जांगिड़ मोटर्स एवं जांगिड़ फाउण्डेशन, आर0एस0 चोयल विख्यात मोटिवेटर एवं वक़्ता तथा गोपाल चोयल उपस्थित रहे।

जांगिड़ फाउण्डेशन के चेयरमैन राजेश शर्मा द्वारा जांगिड़ फाउण्डेशन की ओर से छात्र-छात्राओं एवं खेलकूद में समाज का नाम रोशन करने वाल खिलाड़ियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। इस मौके पर समाज के हजारों लोगों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशालता प्रदान की। कार्यक्रम में वरिष्ठ नागरिकों को भी सम्मानित किया गया जो कि एक बहुत ही अद्भुद एवं कार्यक्रम की पटकथा चार चांद लगा देने वाला लम्हा रहा। बुजुर्गों के साथ ही अन्य उपस्थित लोगों ने भी आयोजन की सराहना की।

कार्यक्रम में उपस्थित सेल्फ डिफेन्स कोच दिल्ली पुलिस अशोक चुघ के हाथों जांगिड़ फाउण्डेशन की ओर से खिलाड़ियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

इस आयोजन की सफलता के लिए एवं अतिथि सत्कार के लिए सुधीर पंवार तथा उनकी टीम ने सराहनीय प्रयास किया।

गो सेवक संत पदमाराम कुलरिया ने दीपावली के अवसर पर नन्दनवन स्थित गौशाला को एक एम्बुलेंस भेंट किया। उनके इस सराहनीय कार्य व निःस्वार्थ भाव से की जा रही सेवाभाव की सर्वत्र प्रशंसा हो रही है।

अखिल भारतीय विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा की केन्द्रीय बैठक में विश्वकर्मा शिल्पकार विकास आयोग बनाने की मांग

शिव प्रकाश विश्वकर्मा

नयी दिल्ली। अखिल भारतीय विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री राम आसरे विश्वकर्मा ने भारत सरकार से विश्वकर्मा शिल्पकार विकास आयोग बनाने की मांग की है। नयी दिल्ली स्थित एम0पी0 क्लब, नार्थ एवेन्यू में अखिल भारतीय विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि कुटीर उद्योगों में लगे करोड़ो कारीगर विश्वकर्मा, लोहार, बढ़ई, कुम्हार, नाई कसेरा, ठठेरा, शिल्पकार के रोजगार को सुरक्षित करने के लिए महासभा, केन्द्र सरकार से 'विश्वकर्मा शिल्पकार विकास आयोग' बनाने की मांग करती है।

श्री विश्वकर्मा ने कहा कि केन्द्र सरकार के कई विभागों में जैसे सेना, पीडब्ल्यूडी, रेलवे, इंजीनिरिंग सहित कई तकनीकी विभागों में पुश्तैनी पेशे के आधार पर नौकरी विश्वकर्मा समाज के लोगों के लिए आरक्षित होते थे। आईटीआई की ट्रेनिंग और कौशल विकास मिशन की ट्रेंनिंग ने विश्वकर्मा लोहार, बढ़ई के कारीगरों के पद से आरक्षण समाप्त कर दिया है और यह लोग बेरोजगार हो गये हैं।

अखिल भारतीय विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा विश्वशिल्पियों को नीतियों और कार्यक्रमों के आधार पर एकजुट करेगी और उनकी महाशक्ति बनायेगी। आजादी के 70 वर्षों के बाद भी विश्वकर्मा समाज की सभी जातियों को एक समान अवसर नहीं दिया गया। अखिल भारतीय विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा केन्द्र सरकार से मांग करती है कि सम्पूर्ण विश्वकर्मा शिल्पकार समुदाय की सामाजिक और जातिगत विषमता को दूर करके एक ही श्रेणी 'अनुसूचित जनजाति' की श्रेणी में नोटीफाई करे ताकि इस समुदाय के बच्चों को सरकारी नौकरियों में आरक्षण का लाभ मिल सके और यह समुदाय भी आरक्षित श्रेणी से लोकसभा और विधानसभा का चुनाव लड़कर, लोकसभा और विधान सभा में भागीदारी प्राप्त कर सके। सम्पूर्ण विश्वकर्मा शिल्पकार समुदाय को एक ही श्रेणी में चिन्हित करने पर जातिवार जनगणना में इनकी संख्या सम्पूर्ण रूप से प्रदर्शित हो सकेगी और यह आरक्षण का सम्पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकेंगे। अखिल भारतीय विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा केन्द्र सरकार से पिछड़े वर्गों की समस्त जातियों की जनगणना को प्रकाशित करने की मांग करती है, ताकि उसमें शिल्पकार विश्वकर्मा समाज अपनी जनसंख्या का आंकलन कर सके और उसे आबादी के अनुसार भागीदारी सुनिश्चित कराया जा सके।

श्री विश्वकर्मा ने कहा कि 17 सितम्बर को भगवान विश्वकर्मा की पूजा पूरे देश में सभी समुदाय और वर्ग के लोग करते हैं। विश्वकर्मा समाज के लोग विश्वकर्मा पूजा को सम्मान और स्वभिमान दिवस के रूप में मनाते हैं। उत्तर प्रदेश की समाजवादी पार्टी की

सरकार ने विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर सार्वजनिक अवकाश घोषित करके विश्वकर्मा समाज की पहचान बनाई थी। महासभा भाजपा सरकार द्वारा विश्वकर्मा पूजा की छुट्टी को निरस्त करके विश्वकर्मा की पहचान को समाप्त करने की साजिश मानती है। अभी हाल में हरियाणा सरकार द्वारा विश्वकर्मा पूजा दिवस को मजदूर दिवस के रूप में मनाने को महासभा विश्वकर्मा समाज का अपमान मानती है। भगवान विश्वकर्मा रचना और शिल्प के देवता हैं। उनके वंशज देश के रचनाकार और निर्माता हैं। उन्हें मजदूर की श्रेणी में रखना उनका अपमान है।

अखिल भारतीय विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा केन्द्र सरकार से मांग करती है कि दिनांक 17 सितम्बर 2017 विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर राष्ट्रीय अवकाश घोषित करके विश्वकर्मा समाज का सम्मान और पहचान पूरे देश में स्थापित करे, ताकि विश्वकर्मा शिल्पकार कारीगरों के विकास के साथ-साथ रोजगारपरक नीतियां बनाए जा सके और इस समुदाय का विकास किया जा सके। महासभा यह भी मांग करती है कि भगवान विश्वकर्मा के नाम पर 'विश्वकर्मा पुरस्कार' की घोषणा की जाये और विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति को 'विश्वकर्मा पुरस्कार' से सम्मानित किया जाये। देश में विश्वकर्मा इन्जीनियरिंग और तकनीकी संस्थान की स्थापना की जाये। भगवान विश्वकर्मा के नाम पर सरकारी नीतियों का नामकरण किया जाये ताकि विश्वकर्मा की पहचान बन सके।

महासभा पूरे देश के सभी संस्थाओ को एक मंच पर लाने और विश्वकर्मा समाज की विशाल रैली करके समाज की एकजुटता प्रदर्शित करेगी। देश के सभी राज्यो में देश की प्रमुख संस्थाओ को मिलाकर एक कामन एजेन्डा प्रोग्राम बनाया जायेगा और सभी को सम्मिलित करते हुए केन्द्र सरकार से विश्वकर्मा शिल्पकार समाज का सम्मान और पहचान बनाने तथा आबादी के अनुसार देश और प्रदेश सरकार में भागीदारी सुनिश्चित करने की मांग करेगी।

केन्द्र सरकार के कई विभागों में जैसे सेना, पीडब्ल्यूडी, रेलवे, इंजीनिरिंग सहित कई तकनीकी विभागों में पुश्तैनी पेशे के आधार पर नौकरी विश्वकर्मा समाज के लोगों के लिए आरक्षित होते थे। आईटीआई की ट्रेनिंग और कौशल विकास मिशन की ट्रेनिंग ने विश्वकर्मा लोहार, बढ़ई के कारीगरों के पद से आरक्षण समाप्त कर दिया है और यह लोग बेरोजगार हो गये हैं।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के मुख्य अतिथि उड़ीसा के राज्यसभा सांसद ए0वी0 स्वामी ने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि विश्वकर्मा समाज को संगठित कर एक नई पहचान बनाने की जरूरत है, ताकि विश्वकर्मा समाज का संगठन मजबूत हो सके तभी विश्वकर्मा समाज का भला होगा।

कार्यक्रम में सर्वश्री एस0 बासू तमिलनाडु, शंकर प्रताप विश्वकर्मा झारखण्ड, बाबूलाल जांगिड़ राजस्थान, आत्माराम पांचाल दिल्ली, राजेश विश्वकर्मा (युवा प्रदेश अध्यक्ष) उत्तर प्रदेश, माताराम धीमान पंजाब, गंगा राम विश्वकर्मा महाराष्ट्र, एच0एन0 विश्वकर्मा असम, डॉ0 प्रमीला विश्वकर्मा झारखण्ड, ई0 विजेश शर्मा सहारनपुर, सरदार मनजीत सिंह उत्तर प्रदेश, सुरेन्द्र कण्डेरा दिल्ली, दिनेश गौड़ दिल्ली, डॉ0 सी0पी0 शर्मा उत्तर प्रदेश, रविन्द्र धीमान उत्तराखंड, फौजी भगवान राम राजस्थान, त्रिवेन्द्र कुमार पांचाल दिल्ली, अच्छेलाल विश्वकर्मा (प्रदेश अध्यक्ष) उत्तर प्रदेश, अवतार सिंह हि0 प्रदेश, सुभाष विश्वकर्मा हि0 प्रदेश, बलवान चन्द शास्त्री हि0 प्रदेश, कुलवीर बर्धनहि0 प्रदेश, शिव कुमार तमिलनाडु, सूर्यकान्त शर्मा दिल्ली, डॉ0 मनोरंजन वर्मा दिल्ली, डॉ0 जितेन्द्र धीमान दिल्ली, अनिल जांगड़ा दिल्ली, विकास पांचाल दिल्ली, डॉ0 जितेन्द्र सिंह वर्मा आगरा, यशपाल सिंह दिल्ली, दीपक पांचाल दिल्ली, मनोज पांचाल दिल्ली, राकेश पांचाल दिल्ली, वशिष्ठ नारायण महाराष्ट्र, मणिराज विश्वकर्मा मध्य प्रदेश, हरीश विश्वकर्मा मध्य प्रदेश, के0 वेंकटरमन आंध्र प्रदेश, बसंत विश्वकर्मा मध्य प्रदेश, राजू विश्वकर्मा दिल्ली, छोटे लाल विश्वकर्मा दिल्ली, राजेन्द्र प्रसाद जांगिड़ मुजफ्फरनगर, वी0के0 शर्मा एडवोकेट दिल्ली, गौरव धीमान बिजनौर, राजीव धीमान गुड़गांव, दीपक जांगिड़ हरियाणा, विजय जांगिड़ जालौन, शीतल विश्वकर्मा दिल्ली, सतीश शर्मा दिल्ली, तरुण पांचाल दिल्ली, एन0 एल0 जांगिड़ फरीदाबाद, भरत सुथार गुजरात, डॉ0 मुकेश पांचाल दिल्ली, शिवकुमार विश्वकर्मा जौनपुर, वेदपाल पांचाल छत्तीसगढ़ सहित सैकड़ों प्रतिनिधिगणों ने अपने विचार व्यक्त किये।

सुश्री पार्वती को 'विश्वकर्मा रत्न' व 'भारत गौरव' सम्मान

जयपुर। जोधपुर की बेटी सुश्री पार्वती जांगिड़ को जयपुर में आयोजित 'विराट ब्रह्म विश्वकर्मा महासंत सम्मेलन' में जगतगुरू विश्वकर्मा शंकराचार्य स्वामी दिलीप योगीराज महाराज, अंतर्राष्ट्रीय विश्वकर्मा महाशक्ति पीठ, प्रयागराज व श्रीमद् दादू पीठाधीश्वर आचार्य प्रवर श्री श्री 1008 गोपाल साहेब जी महाराज, सतगुरू कबीर आश्रम पलसाना,सीकर तथा ब्रह्मर्षि नाद-बिंद निर्विकार पीठाधीश्वर स्वामी अभयदास जी महाराज विश्वकर्माचार्य के कर कमलों व सैकड़ों संत-महात्माओं व नागरिकों के सानिध्य में नागरिक सम्मान के साथ ही 'विश्वकर्मा रत्न' व 'भारत गौरव सम्मान' प्रदान किया गया।

ज्ञात हो कि सुश्री पार्वती जांगिड़ ने अपना जीवन भारतीय स्वाभिमान व बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए समर्पित किया है। सुश्री पार्वती छोटी सी उम्र में एक आइकॉनिक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उभरी हैं, जो समाज और देश के लिए गौरव की बात है।

पार्वती बचपन से ही हर साल रक्षाबंधन का पर्व बीएसएफ के साथ बॉर्डर पर तैनात फौजी भाइयों के साथ मनाती हैं। समय-समय पर फौजी भाइयों का हौंसला अफजाई करना उनके जीवन का अंग बना चुका है। इस कारण बीएसएफ के जवान पार्वती को 'सिस्टर ऑफ बीएसएफ' भी कहते हैं।

पार्वती विश्व के सबसे बड़े 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान', 'गर्ल राइजिंग' में गर्ल राइजिंग एम्बेस्डर के रूप में जुड़ी हुई हैं और 'यूथ पार्लियामेंट ऑफ भारत' की चेयरपर्सन व राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। राष्ट्र स्वाभिमान के कार्यों और बालिका शिक्षा के लिए सुश्री पार्वती हमेशा अग्रणी रहती हैं।

जयपुर। अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा, जयपुर के जिला अध्यक्ष रह चुके हरिशंकर जांगिड़ को कांग्रेस ने बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है। कांग्रेस ने श्री जांगिड़ को जनपद जयपुर का कांग्रेस पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ का जिला अध्यक्ष नामित किया है। उनके इस नियुक्ति से जांगिड़ समाज में हर्ष है। लोगों ने बधाई दी है।

प्रतिभावान बच्चों को किया सम्मानित

झज्जर। जांगिड़ ब्राह्मण विद्यार्थी छात्रवृत्ति कोष के तहत झज्जर में राज्यस्तरीय छात्रवृत्ति वितरण समारोह मनाया गया। समारोह में प्रदेश के 100 से अधिक आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को पांच लाख से ज्यादा की छात्रवृत्ति वितरित की गई। साथ ही जिले के प्रतिभावान विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया गया।

इस मौके पर अखिल भारतीय जांगिड़ सभा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ0 शेर सिंह ने समाज के लोगों का बच्चों को शिक्षित करने और उच्चकोटि की शिक्षा दिलाने में विशेष रुचि लिए जाने का आह्वान किया।

मुख्य अतिथि लेख राम ने समाज को इसी प्रकार एकजुट बने रहने के लिए प्रेरित किया। कहा कि विज्ञान के जनक भगवान विश्वकर्मा के वंशज जांगिड़ समाज को कला व ज्ञान जन्म के संस्कारों में मिला है। इसलिए जांगिड़ समाज में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। लेकिन उन्हें अच्छे संस्कारों व शिक्षा के जरिए तराश कर आगे बढ़ाने की जरूरत है। वार्षिक छात्रवृत्ति वितरण समारोह एवं पूर्व विद्यार्थी मिलन कार्यक्रम का शुभारंभ उर्मिला देवी रोहतक ने ध्वजारोहण कर किया। ध्वजारोहण के पूर्व हवन-पूजन भी किया गया। समारोह में सेवानिवृत्त प्रबंधक प्रताप सिंह खेडली, प्राचार्य रामफल, ताराचंद सेवानिवृत्त जिला राजस्व लेखाकार, प्रमिला देवी विशिष्ट अतिथि के रुप में शामिल रहे। कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष जोगिंदर सिलानी रहे। कोष के प्रदेश अध्यक्ष देवीशंकर जांगड़ा, सिलक राम जांगड़ा महा सचिव, हजारी लाल, रामेश्वर दत्त बहादुरगढ़, सतपाल वत्स, सेवानिवृत्त जज जय सिंह जांगडा, सेवानिवृत्त आबकारी एवं कराधान आयुक्त रामकिशन सेवानिया, लीलूराम, राजेन्द्र सिंह, सुलतान सिंह जींद, प्रेम सिंह नागलोई, हंसराज जांगड़ा, जांगिड़ समाज के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष महावीर सिंह डरोलिया विशेष अतिथि के रुप में कार्यक्रम में शामिल रहे।

समारोह के दौरान कनिका जांगड़ा व प्रियंका खंडेलवाल को झज्जर जिले की विशेष प्रतिभा के रूप में सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के आयोजन समिति के सदस्य अजीत सिंह जांगड़ा, जिला प्रधान मनमोहन जांगिड़, रामप्रकाश जांगड़ा, मा0 द्वारका प्रसाद, रण सिंह सिलाना, श्यामलाल जांगड़ा, कृष्णदत्त जांगड़ा, कैप्टन ईश्वर सिंह, बलवंत सिंह पाटोदा, सुनील दुजाना, राजेन्द्र जांगड़ा का विशेष योगदान रहा। झज्जर जिला की ओर से रामेश्वर शर्मा, महावीर शर्मा, एएसआई सतबीर सिंह, सुरेश शास्त्री, जय किशन को विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

राजनैतिक उपस्थिति दर्ज करने की लड़ाई लड़ेगा विश्वकर्मा समाज

फरीदाबाद। विश्वकर्मा समाज आने वाले समय में अपनी राजनैतिक उपस्थिति दर्ज करने के लिए जोर-शोर से सरकार पर दबाव बनाएगा। इसके लिए पूरे हरियाणा के विश्वकर्मा वंशज को जोड़कर सरकार के सामने पेश किया जायेगा। और अपने हक की पुरजोर मांग की जाएगी। आज तक किसी भी सरकार ने कमेरा वर्ग पर ध्यान नहीं दिया है। यह कहना है वरिष्ठ बीजेपी नेता रतनलाल शर्मा का। श्री शर्मा जवाहर कॉलोनी में ब्रह्मऋषि अंगिरा शिक्षा समिति के 23वें स्थापना दिवस के मौके पर मुख्य अतिथि के तौर पर बोल रहे थे।

रतनलाल शर्मा का कहना है कि आज तक किसी भी सरकार ने विश्वकर्मा समाज को राजनैतिक रूप से उनका हक नहीं दिया है। हाल ही में हुए निगम चुनावों में किसी भी पार्टी ने विश्वकर्मा समाज को टिकट नहीं दिया जबकि एनआईटी में 50 से ज्यादा लोग विश्वकर्मा समाज से जुड़े हुए हैं और अपनी मेहनत के बल पर अपना रोजगार चला रहे हैं। अन्य प्रदेशों से आने वाले लोग इनकी वर्कशाप में काम पते हैं और प्रदेश को तरक्की देने में बहुत बड़ी भूमि निभाते हैं। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के मेक इन इंडिया और स्किल इंडिया को सफल बनाने में विश्वकर्मा समाज का पूरा योगदान होने के बाद भी राजनैतिक रूप से इनको इनका हक नहीं दिया जा रहा है। रतनलाल ने बताया कि बहुत जल्द एक प्रदेश स्तरीय प्रतिनिधि मंडल मुख्यमंत्री से मिलेगा और अपने हक की मांग करेगा। बीजेपी पार्टी पर आरोप लगते हुए रतनलाल शर्मा ने कहा कि लोकसभा और विधानसभा चुनावों में पार्टी का साथ देने के बावजूद एक भी विश्वकर्मा समाज से जुड़े हुए कार्यकर्ता को किसी भी बोर्ड आदि का सदस्य या चेयरमैन नहीं बनाया जबकि गुर्जर और कई पंडितों को चैयरमेन बना दिया गया। कार्यकर्म में ब्रह्मऋषि अंगिरा स्कूल के छात्र-छात्राओं ने रंगारंग कार्यकर्म भी प्रस्तुत किया। इस अवसर पर जागड़ा ब्राह्मण सभा के प्रधान हनुमान जागड़ा, सेक्टर 55 शाखा सभा प्रधान सुरेश जागड़ा, हरीश कुमार, राजेश जागड़ा, वेद प्रकाश शर्मा, समेत जिले भर से आये गणमान्य लोग मौजूद रहे।

शुभकामना

'विश्वकर्मा किरण' पत्रिका, विश्वकर्मा समाज के उत्थान का बहुत ही अच्छा माध्यम है। समाज के सभी लोग जो सामाजिक विकास से प्रेरित है उन्हें अपने समाज की सभी गतिविधियां समय-समय पर प्राप्त होती रहती है व अपने विचारों से इस पत्रिका के माध्यम से एक नयी पहचान तथा प्रेरणा श्रोत बना जा सकता है। विश्वकर्मा समाज के सभी शुभचिंतको से आग्रह है कि अपने इर्द-गिर्द सभी भाइयों को सुशिक्षित होने की प्रेरणा दें। जन्म से ही इंजीनियर कहा जाने वाला समाज अन्य समानान्तर वर्गों की अपेक्षा अभी भी शिक्षा के अभाव में काफी उपेक्षित है, शिक्षा विकास की कुंजी है। मैं पत्रिका के माध्यम से आप सभी से अनुरोध करता हूं कि शिक्षा पर विशेष ध्यान दें।

'विश्वकर्मा किरण' के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

इं0 जितेन्द्र कुमार विश्वकर्मा

भगवान विश्वकर्मा की देन हैं, मानव जाति को शिल्पकला विज्ञान के सभी चमत्कार

संकलनकर्ता- सुनील विश्वकर्मा

सृष्टि के आदिकाल, जो पाषाण युग कहलाता है, में आज का यह मानव समाज वनमानुष के रूप में वन-पर्वतों पर इधर से उधर उछल-कूद कर रहा था। मनुष्य की उस प्राकृतिक अवस्था में खाने के लिए कंदमूल, फल और पहनने को वलकल तथा निवास के लिए गुफाएं थीं। उस प्राकृतिक अवस्था से आधुनिक अवस्था में मनुष्य को जिस शिल्पकला विज्ञान ने सहारा दिया, उस शिल्पकला विज्ञान के अधिष्ठाता एवं आविष्कारक महर्षि आचार्य विश्वकर्मा थे। शिल्प विज्ञान प्रवर्तक अथर्ववेद के रचयिता कहे जाते हैं। अथर्ववेद में शिल्पकला विज्ञान के अनेकों आविष्कारों का उल्लेख है। पुराणों ने भी इसको विश्वकर्मा रचित ग्रंथ माना है, जिसके द्वारा अनेकों विद्याओं की उत्पत्ति हुई।

मानव जीवन की यात्रा का लंबा इतिहास है और इसका बहुत लंबा संघर्ष है। भगवान विश्वकर्मा ने उसे सबसे पहले शिक्षित और प्रशिक्षित किया ताकि उसे विभिन्न शिल्पों में प्रशिक्षित किया जा सके। इस तरह मानव की संस्कृति और सभ्यता का प्रथम प्रवर्तक भगवान विश्वकर्मा जी हुए जिसे वेदों ने स्वीकार किया है और उनकी स्तुति की है।

इस प्रकार विभिन्न कलाओं का विकास हुआ। धर्म ग्रंथों में कहा जाता है कि भगवान विश्वकर्मा के पांच पुत्र हुए। उन्होंने अपने पांचों पुत्रों को विभिन्न शिल्पों में दक्ष बनाया। प्रथम पुत्र मनु लौह कला में प्रवीण हुआ, दूसरा पुत्र मय काष्ठ कला का ज्ञाता बना, तीसरे पुत्र स्वष्टा ने ताम्र कला में विशेषता प्राप्त की, चौथा पुत्र शिल्पी पाषाण कला का मर्मज्ञ हुआ और पांचवां पुत्र दैवज्ञ स्वर्ण कला का ज्ञाता बना। उनके पांचों पुत्रों ने विश्वकर्मा के शिल्पकला विज्ञान का विकास और विस्तार किया, जिसके फलस्वरूप मानव जाति को सुख-सुविधा के लिए अनेक साधन-प्रसाधन प्राप्त हुए।

विश्वकर्मा ने मानव जाति को शासन-प्रशासन में प्रशिक्षित किया। उन्होंने अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों का आविष्कार और निर्माण किया, जिससे मानव जाति सुरक्षित रह सके। उन्होंने अपनी विमान निर्माण विद्या से अनेक प्रकार के विमानों के निर्माण किए जिन पर देवतागण तीनों लोकों में भ्रमण करते थे। उन्होंने स्थापत्य कला से शिवलोक, विष्णुलोक, इंद्रलोक आदि अनेक लोकों का निर्माण किया। भगवान विष्णु का सुदर्शन चक्र, इंद्र के वज्र और महादेव के त्रिशूल का भी उन्होंने निर्माण किया जो अमोघ अस्त्र माने जाते हैं। आज शिल्पकला विज्ञान के जो भी चमत्कार देखने को मिलते हैं, वे सभी भगवान विश्वकर्मा की देन है।

भारतवर्ष के सामने अखंडता, सांप्रदायिक सद्भावना तथा सामाजिक एकता की समस्याओं का समाधान विश्वकर्मा दर्शन में है। भारत को स्वावलंबी और स्वाभिमानी राष्ट्र बनाने की जो बात कही जाती है, उसका समाधान भी विश्वकर्मा के शिल्पकला विज्ञान में ही है। यदि इसको विकसित किया जाए तो भारत से बेकारी और गरीबी दूर हो जाएगी और पृथ्वी पर भारत का एक अभिनव राष्ट्र के रूप में अवतरण होगा। सभी देवताओं की प्रार्थना पर विश्वकर्मा ने पुरोहित के रूप में पृथ्वी पूजन किया जिसमें ब्रह्मा यजमान बने थे। पुरोहित कर्म का प्रारंभ तभी से हुआ।

सभी देवताओं ने भगवान विश्वकर्मा को ही सक्षम देव समझा तथा उन सबके आग्रह पर वह पृथ्वी के प्रथम राजा बने, इन सभी चीजों का जिक्र भारतवर्ष के वेद पुराणों में है। कश्यप मुनि को राज-सत्ता सौंपकर विश्वकर्मा भगवान शिल्पकला विज्ञान के अनुसंधान के लिए शासन मुक्त हो गए क्योंकि भारत के आर्थिक विकास और स्वावलंबन के लिए यह आवश्यक था। कुछ दिनों के शासन में विश्वकर्मा भगवान ने शासन को सक्षम, समर्थ तथा शक्तिशाली बनाने के अनेकों सूत्रों का निर्माण किया जिस पर गहराई से शोध करने की आज आवश्यकता है।

के0पी0 नानजुंडी

अखिल कर्नाटक विश्वकर्मा महासभा के 9वें वर्षगांठ के अवसर पर बेंगलुरू में केन्द्रीय गृहमन्त्री राजनाथ सिंह व आर्ट आफ लिविंग के संस्थापक श्रीश्री रविशंकर का अभिनंदन करते पदाधिकारीगण। इस अवसर पर कई अन्य केन्द्रीय मन्त्री भी उपस्थित रहे। यह कार्यक्रम अखिल कर्नाटक विश्वकर्मा महासभा के अध्यक्ष के0पी0 नानजुंडी के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ।

इस कार्यक्रम ने कर्नाटक में विश्वकर्मा समाज की मजबूती का अहसास कराया है।

कर्नाटक प्रदेश की धरती से राजनीतिक पारी खेलने वाले अखिल कर्नाटक विश्वकर्मा महासभा के अध्यक्ष के0पी0 नानजुंडी एक मजबूत राजनेता के रूप में उभर रहे हैं। कभी कांग्रेस की राजनीति करने वाले के0पी0 नानजुंडी बीते जून माह में भाजपा में शामिल हो गये। उनके पार्टी में शामिल होते ही भाजपा ने उन्हें कर्नाटक का प्रदेश उपाध्यक्ष बनाकर संगठन में भागीदारी दी। के0पी0 नानजुंडी एक ऐसे नेता हैं जो गरीब स्वर्णकार परिवार में जन्म लेकर आज बड़े व्यवसायी की भी भूमिका में हैं। उन्होंने विश्वकर्मा समाज का मजबूत संगठन खड़ाकर एकता की मिशाल कायम की, तो बड़े–बड़े राजनीतिक नेताओं, मुख्यमन्त्री, केन्द्रीय मन्त्री आदि ने समाज के कार्यक्रम में उपस्थित होकर विश्वकर्मा समाज के विकास के वादे किये।

के0पी0 नानजुंडी को ''विश्वकर्मा किरण'' पत्रिका परिवार की तरफ से असीम शुभकामनाएं।

Living Style Furniture

Deals in: Home & Office Furniture , Modular Kitchen

Furniture

Timeless designs in real wood

Authorised Dealer:- ZUARI FURNITURE Kosta Peps Stellar FURNITURE & LIFESTYLE

Alambagh –Mob:- 9129083999 • Raebareli Road:- 9129084999

हमारे युवा ही भविष्य के संचालकः नवीन विश्वकर्मा

युवाओं को एकसूत्र में बांधना ही उद्देश्यः महेन्द्र झा

ललितपुर। अखिल भारतीय युवा विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा द्वारा नगर स्थित इलाईट के पास ब्याना नाला स्थित झा समाज की धर्मशाला में दशहरा मिलन समारोह कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसके मुख्य अतिथि के रूप में नवीन विश्वकर्मा प्रदेश सचिव व विशिष्ट अतिथि के रूप में महेश विश्वकर्मा, आर0एल0 विश्वकर्मा, शैलेन्द्र विश्वकर्मा उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता अखिल भारतीय युवा विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा के जिलाध्यक्ष महेन्द्र झा ने की।

दशहरा मिलन समारोह में उपस्थित मुख्य अतिथि नवीन विश्वकर्मा ने कहा कि हमारे युवा ही भविष्य के संचालक हैं, समाज के युवाओं को संगठित होकर समाज में फैली कुरूतियों को दूर करना होगा। इसी उददेश्य से समाज आगे की ओर कदम बढ़ायेगी। वहीं महेश विश्वकर्मा ने भी अपने सम्बोधन में कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से युवाओं में उत्साह बढ़ता है और एक-दूसरे व्यक्ति से मिलकर पहचान बढ़ती है। समय-समय पर ऐसे कार्यक्रम होना चाहिये, ऐसे कार्यक्रमों से युवा संगठित होते हैं। वहीं आर0एल0 विश्वकर्मा ने भी अपने उद्बोधन में कहा कि कार्यक्रम बहुत ही सराहनीय रहा, कार्यक्रम में उपस्थित सभी युवा नये जोश में दिखे, यह सक्रिय जोश युवाओं में आगे भी और ऊर्जा भरेगा। शैलेन्द्र विश्वकर्मा ने कहा कि कार्यक्रमों से युवाओं को एक नई ऊर्जा मिलती है, आगे भी यही सिलसिला जारी रहना चाहिये।

समारोह के अंत में विश्वकर्मा समाज के युवा जिलाध्यक्ष महेन्द्र झा ने कहा कि हम जनपद में युवाओं को एकसूत्र में बांधने का कार्य करने में प्रयासरत है। समाज के होनहार युवाओं की तलाश में हैं, इन्हें जोड़कर उनमें जागरूकता प्रदान करेंगे जिससे समाज का हर घर नई सोच के साथ आगे बढ़ेगा। दशहरा मिलन समारोह में सभी उपस्थित युवाओं ने एक-दूसरे के गले मिलकर परिचय दिया और आगे भी ऐसे कार्यक्रमों में उपस्थिति दर्ज कराने की बात कही।

इस अवसर पर युवा जिलाध्यक्ष महेन्द्र झा, महामंत्री अखिलेश झा, जिला उपाध्यक्ष राकेश झा, जिला उपाध्यक्ष बृजेन्द्र झा, जिला महासचिव धर्मेन्द्र झा, जिला सचिव दिनेश झा, जिला सचिव पवन झा, जिला कोषाध्यक्ष अरविन्द झा एड, विधानसभा अध्यक्ष ललितपुर जगदीश झा, विधानसभा अध्यक्ष महरौनी पंकज झा, ब्लॉक अध्यक्ष मड़ावरा महेन्द्र झा, ब्लॉक अध्यक्ष महरौनी चन्द्रेश झा, ब्लॉक अध्यक्ष बार अनिल कुमार झा, ब्लॉक अध्यक्ष बिरधा राकेश झा, बालकिशन झा, प्रभूदयाल झा, उत्तमचन्द्र झा, दुर्गा प्रसाद झा, महेश चन्द्र झा, छुट्टनलाल झा, आशीष झा तालबेहट, लक्ष्मन प्रसाद झा, छोटेलाल झा, विधानसभा अध्यक्ष जाखलौन जुगल किशोर झा, नारायण झा, मिट्ठूलाल झा, संतोष झा, सीताराम झा, रामचरन झा, राजेश झा नगर सचिव, प्रसन्न कुमार झा, गौरीशंकर झा, नीतेश विश्वकर्मा, लालचन्द्र झा, अनिल कुमार झा, सीताराम झा, रवि झा, राहुल झा सहित अनेकों लोग उपस्थित रहे। अंत में आभार व्यक्त जिला मीडिया प्रभारी अर्जुन झा ने व्यक्त किया।

शिक्षा से ही होगा युवा पीढ़ी का निर्माणः ओमानंद

विश्वकर्मा समाज का मेधावी अलंकरण समारोह, हाईस्कूल और इंटरमीडिएट के 141 छात्र-छात्रायें सम्मानित

मुजफ्फरनगर। भगवतपीठ श्री शुकदेव आश्रम, शुक्रताल के पीठाधीश्वर स्वामी ओमानंद सरस्वती ने कहा कि शिक्षा जीवन का निर्माण करती है। युवा पीढ़ी शिक्षित बनेगी, तभी परिवार, समाज और राष्ट्र का सवार्गीण विकास संभव है।

श्री विश्वकर्मा धीमान सेवा संघ के तत्वाधान में रूड़की रोड़ स्थित दीपक पैलेस में आयोजित अलंकरण समारोह में विश्वकर्मा समाज के मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। वर्ष 2017 की हाईस्कूल परीक्षा में मेधावी अमन सिंह, दैविक मोहन, अखिल तथा इंटरमीडिएट में ऋषभ कुमार, शिवानी धीमान और काजल को मुख्य अतिथि स्वामी ओमानंद सरस्वती जी महाराज ने सम्मानित कर आशीर्वाद प्रदान किया। स्वामी जी ने कहा कि सृष्टि निर्माता भगवान श्री विश्वकर्मा प्राणिमात्र के आराध्य हैं। पूरे विश्व में तकनीकी ज्ञान के आदि प्रवर्तक विश्वकर्मा की महिमा स्थापित है। जेम्स व्हाट, अल्फ्रेड नोबल, एडिसन, अब्राहम लिंकन आदि महान व्यक्तित्व विश्वकर्मा वंश में जन्मे थे। वैदिक संस्कृति से जुड़े समाज के बच्चे तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में देश को अग्रणी बनायें। शिक्षा जीवन मे परिवर्तन लाती है। शिक्षा ऋषि वीतराग स्वामी कल्याणदेव जी महाराज ने गांव-गरीब के घर विद्या की ज्योति जगाई। विद्यार्थी सद्गुणों को जीवन मे धारण करें। अनुशासन, ईमानदारी, देशभक्ति, संयम, स्वच्छता, परिश्रम और माता-पिता की सेवा अपनायें। विश्वकर्मा समाज की सेवाओं का राष्ट्र ऋणी है।

विशिष्ट अतिथि श्रम प्रवर्तन अधिकारी नीरज मोहन ने कहा कि विद्यार्थी पढ़ाई के लिये लक्ष्य निर्धारित करें। लगन और समर्पण से ही कामयाबी मिलती है। आचार्य गुरुदत्त आर्य ने कहा कि युवा नैतिक शिक्षा के मूल्यों को समझें। नैतिक आचरण पवित्र बनेगा, तभी जीवन उत्तम बनेगा। विहिप के पूर्व जिलाध्यक्ष राधेश्याम विश्वकर्मा ने कहा कि बच्चे आईआईटी, मेडिकल जैसी परीक्षाओं के साथ सिविल सर्विस का लक्ष्य बनायें। वैदिक प्रचारक पंडित शांता प्रकाश आर्य ने कहा कि युवा शक्ति जागेगी तो निश्चित ही समाज की उन्नति होगी। शिक्षाविद रविदत्त धीमान ने कहा कि बुराइयों के खिलाफ क्रांति की आवश्यकता है। राजकीय इंटर कालेज के प्रधानाचार्य रमेश चंद ने श्रेष्ठ अमन तथा ऋषभ को पुस्तकें भेंट की। वास्तुविद पंडित ज्ञानचंद का अमूल्य सेवाओं के लिए स्वामी ओमानंद सरस्वती ने अभिनंदन किया। संघ के महामंत्री नरेश विश्वकर्मा कु अनुसार हाईस्कूल वर्ग में 77 तथा इंटरमीडिएट में 64, कुल 141 मेधावियों को सम्मानित किया गया है।

समारोह की अध्यक्षता श्री विश्वकर्मा धीमान सेवा संघ अध्यक्ष निर्मल सिंह धीमान एवं संचालन ओमदत्त आर्य व नरेश विश्वकर्मा ने किया।

इस अवसर पर कालूराम धीमान, सरदार सुलक्खन सिंह नामधारी, विजेंद्र धीमान कुरलकी, सरदार बलविंदर सिंह, सेवाराम धीमान, मा. महेंद्र दत्त, नरेंद्र श्रंगी, सतीश धीमान, आनंद धीमान, तेलूराम धीमान, बाबूराम पांचाल, जगदीश पांचाल, ओमप्रकाश धीमान, भीष्म धीमान, जनार्दन, मुकेश धीमान, शुभम, दलजीत, आशीष, अमित सहित काफी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

...अलंकरण समारोह की झलकियां

विश्वकर्मा एकीकरण अभियान का 15वां अभियान दिवस समारोह सम्पन्न

इन्दौर। विश्वकर्मा एकीकरण अभियान का 15वां अभियान दिवस समारोह प्रीमियर कोआपरेटिव बैंक सभागार इन्दौर में अनेकों संकल्प एवं विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राष्ट्रीय संचालक डी0एन0 दलवी, मुम्बई (महाराष्ट्र) रहे जबकि समारोह की अध्यक्षता अ0भा0 विश्वकर्मा विराट संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामेश्वर सोनी पांचाल ने किया।

विषेष अतिथि के तौर पर राष्ट्रीय संचालक तथा मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ राज्य प्रभारी, मूर्धन्य समाजसेवी वी0के0 विश्वकर्मा, भोपाल (म0प्र0), राष्ट्रीय संचालक रामनरेश शर्मा, लखनऊ (उ0प0), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बंशीलाल शर्मा, उज्जैन (म0प0), राष्ट्रीय प्रेरक राजनाथ विश्वकर्मा, राष्ट्रीय प्रचारक छोटेलाल यशवंता, कर्नाटक प्रभारी के0 राममूर्ति, महाराष्ट्र प्रभारी विपिन सुतार, झारखण्ड प्रभारी शंकर प्रताप विश्वकर्मा, उत्तर प्रदेश सह प्रभारी राममनोहर वर्मा, जम्मू कश्मीर प्रभारी जयलाल वर्मा, राजस्थान प्रभारी दुर्गेश पांचाल आदि विषेष रूप से मौजूद थे।

समारोह में मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, उत्तरांचल, कर्नाटक, छत्तीसगढ़, दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, उड़ीसा, जम्मू कश्मीर, गुजरात आदि राज्यों के विभिन्न क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त एवं प्रतिष्ठित, चिंतक, शिक्षाविद्, सामाजिक पुरोधा, उद्योगपति, संगठनों के प्रखर सचेतक सहित समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारी, प्रदेश के प्रभारी, सह-प्रभारी, प्रादेशिक संयोजक, युवा एवं महिला शाखा व विभिन्न प्रकोष्ठों के संयोजक, सह-संयोजक सहित बड़ी संख्या में सामाजिक बन्धुओं ने हिस्सा लिया।

मंचासीन अतिथियों ने भगवान विश्वकर्मा के चित्रपट पर दीप प्रज्जवलन एवं माल्यार्पण कर पूर्ण मंत्रोच्चारण के साथ एवं विधि-विधान से अभियान दिवस समारोह का औपचारिक रूप से शुभारम्भ किया। उसके पश्चात सभी मंचासीन अतिथियों का पहचान पत्र पहनाकर स्वागत किया गया। मंडल प्रभारी बिरजू शर्मा, ने स्वागत भाषण किया।

प्रदेश प्रभारी रमेश विश्वकर्मा इन्दौर, ने अपने मधुर एवं ओजस्वी वाणी से समाज बन्धुओं को सतत बांधकर मंच की गरिमा को बनाये रखा। व्यवस्था में मध्य प्रदेश प्रभारी रमेश विश्वकर्मा, मण्डल प्रभारी बिरजू शर्मा (उद्योगपति), मण्डल सह-प्रभारी जनार्दन विश्वकर्मा, मण्डल संचालक शरद शर्मा (वास्तुविद्), मण्डल प्रेरक मांगीलाल पांचाल, मण्डल संयोजक विनोद शर्मा, प्रेरक रामजतन विश्वकर्मा, संयोजक ओम प्रकाश पांचाल, संचालक गयाप्रसाद विश्वकर्मा, प्रभारी राकेश पांचाल, युवा नेता अरविन्द विश्वकर्मा, संतोष विश्वकर्मा, रेनुका पांचाल (ज्योतिष), उमेश करोटिया, रामदीन विश्वकर्मा, नन्दिता विश्वकर्मा, बालेन्दु विश्वकर्मा, श्याम शर्मा, पूर्व पार्षद् सुरेश पांचाल, एम0एन0 विश्वकर्मा (एडवोकेट),

गुड्डू विष्वकर्मा, सी0एम0 विश्वकर्मा, वी0आर0 शर्मा (अग्नि इंजीनियर), राजकुमार विश्वकर्मा, कैलाश नारायण विश्वकर्मा, रूपा विश्वकर्मा, वल्लभ पांचाल, सत्यभामा शर्मा, जे0के0 मिस्त्री, लक्ष्मी पांचाल, हरीश शर्मा, उमाशंकर विश्वकर्मा, परसराम शर्मा, संजय मालवीय, नारायण ओझा, मोहनलाल विश्वकर्मा, काशीराम विश्वकर्मा, उत्तम कुमार विश्वकर्मा, भानू भाई पांचाल, भोला शर्मा, सुमेर शर्मा आदि का सराहनीय सहयोग रहा हैं। अभियान दिवस समारोह का कुशल संचालन राष्ट्रीय संचालक वी0के0 विश्वकर्मा 'पांचालरत्न' ने क्रान्तिकारी व ओजस्वी शैली में किया।

इस मौके पर अ0भा0 विश्वकर्मा विराट संघ के संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष, रामेश्वर सोनी पांचाल, विश्वकर्मा एकीकरण अभियान के राष्ट्रीय संचालक डी0एन0 दलवी का अभिनन्दन राष्ट्रीय संचालक वी0के0 विश्वकर्मा द्वारा किया गया। अतिथियों को शाल-श्रीफल, पगड़ी एवं मुकुट पहनाकर प्रतीक चिन्ह प्रदान किया गया। अभियान प्रमुख के मंशानुसार विश्वकर्मा एकीकरण अभियान का सर्वोच्च अलंकरण 'अभियान रत्न' से वी0के0 विश्वकर्मा को अलंकृत किया गया। उन्हें यह सम्मान सामाजिक समता स्थापित करने हेतु की गई उत्कृष्ट समाजसेवा एवं विश्वकर्मा समाज की समस्त शाखाओं/वर्गों को एकीकृत करने हेतु किए गए विषेष योगदान के लिये दिया गया।

समारोह में समाज के प्रबुद्धजनों के उद्बोधन में नवयुवकों व महिलाओं की सक्रिय भागीदारी, समाज

में सभी का सम्मान, सामाजिक एकता पर प्रभावी ढंग से अपने-अपने विचार रखे। राष्ट्रीय संचालक रामनरेश शर्मा, लखनऊ ने कहा कि बिखरे विश्वकर्मा वंशजों की शक्ति क्षीण हो रही है। इस क्षीण होती शक्ति के संचयन के लिए एकीकरण आवश्यक है। मिशन के स्वरूप की संरचना एक पिरामिड की तरह है। सबसे नीचे खण्ड स्तरीय अभियान दल, उसके ऊपर तहसील और जिला, मण्डल स्तरीय अभियान दल तैयार हो रहे हैं। प्रदेश/केन्द्र शासित क्षेत्र स्तर पर राज्य स्तरीय और राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोच्च शक्ति सम्पन्न राष्ट्रीय अभियान दल का स्वरूप विकसित किया जा रहा है। एकीकरण हमारा लक्ष्य है और सत्ता में भागीदारी हमारी महत्वाकांक्षा है। अभियान का प्रतीक वी-5 एकीकरण का रूपक है और 'विश्वकर्मा विजयतेतराम' का नारा सत्ता में भागीदारी की हमारी महत्वाकांक्षा का अभिप्राय है।

समारोह को महाराष्ट्र प्रभारी विपिन सुतार, झारखण्ड प्रभारी शंकर प्रताप विश्वकर्मा, जम्मू कश्मीर प्रभारी जयलाल वर्मा कर्नाटक प्रभारी के0 राममूर्ति, उत्तर प्रदेश सह-प्रभारी राममनोहर वर्मा ने भी सम्बोधित किया।

मुख्य अतिथि, राष्ट्रीय संचालक डी0एन0 दलवी ने अपने उत्प्रेरक उद्बोधन में कहा कि बिखरे विश्वकर्मा वंशजों की शक्ति क्षीण हो रही है। इस क्षीण होती शक्ति की संचयन के लिए एकीकरण आवश्यक है। इसलिए सम्मेलनों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रचार-प्रसार आदि के माध्यम से हम समाज के एकीकरण के महत्व और अनिवार्यता को रेखांकित कर रहे हैं। अतः आईये हम चले एकीकरण से सत्ता की ओर। अखिल भारतीय विश्वकर्मा विराट संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामेश्वर सोनी पांचाल ने कहा कि हमने विभिन्न प्रान्तों में भ्रमण कर समस्त शाखाओं के प्रतिनिधियों से मिलकर एक सशक्त संगठन का पंजीयन कराकर विश्वकर्मा पुत्रों की सेवा करते आ रहा हूं और जवाहर वाणी के माध्यम से विष्वकर्मा समाज के गतिविधियों को प्रकाशित कर सेवा में समर्पित करते आ रहा हूँ। आज मुझे जो अभिनन्दन किया गया, वह मेरा नहीं विश्वकर्मा समाज का अभिनन्दन है, आप सभी का अभिनन्दन है।

सत्ता में भागीदारी के लिये बनी रणनीति

रांची। झारखण्ड प्रदेश विश्वकर्मा समाज सत्ता में भागीदारी के लिये सामाजिक एकजुटता का प्रयास कर रहा है। इसी के मद्देनजर रांची विधानसभा सभागार में प्रतिनिधि सभा का आयोजन किया गया जिसमें 18 जिलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष विकास राणा ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व सांसद महावीर लाल विश्वकर्मा एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में गौतम सागर राणा, झारखंड प्रदेश विश्वकर्मा समाज के पूर्व अध्यक्ष अरुण कुमार ठाकुर थे।

कार्यक्रम की शुरूआत भगवान विश्वकर्मा के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन से हुआ। सर्वप्रथम मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि तथा कार्यक्रम के अध्यक्ष ने विश्वकर्मा भगवान के चित्र पर पुष्प समर्पित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रधान महासचिव विक्रांत विश्वकर्मा एवं सन्तन शर्मा ने किया। कार्यक्रम में सभी जिलों से आये अध्यक्ष एवं उनके सदस्यों एवं प्रतिनिधियों ने सभा मे भाग लिया, और विभिन्न मुद्दों पर अपना-अपना विचार प्रस्तुत किया। रांची जिला कमेटी द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया।

राजभवन के समक्ष अपनी मांगों को लेकर विशाल धरना पर्दशन करना, झारखण्ड के सभी जिलों में कार्यालय बनाने और विश्वकर्मा भवन का निर्माण करना, आने वाले 2019 के चुनाव में विश्वकर्मा समाज के लोगों को राजनीतिक सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित करना, झारखंड के सभी जिलों में

सम्मेलन करना और अपने अधिकारों की मांग करना।

मुख्य अतिथि महावीर लाल विश्वकर्मा ने समाज को एकजुट कर आगे बढ़ने की बात कही। विशिष्ट अतिथि गौतम सागर राणा ने अपने 40 वर्षों की राजनीति के बारे में समाज के लोगों को अवगत कराते हुए राजनीति में भागीदारी देने पर काफी विचार समाज के प्रति सुझाव दिए।

कार्यक्रम का आयोजन रांची जिला कमेटी के सदस्यों द्वारा किया गया और रांची जिला के अध्यक्ष संतोष कुमार शर्मा के सदस्यों को सफल आयोजन के लिए शुभकामनाएं दी। इस कार्यक्रम में 18 जिलों से लगभग 320 लोगों का आगमन हुआ।

कार्यक्रम को सफल बनाने में रांची जिला कमेटी के गणमान्य लोग मनोज कुमार शर्मा, दिलीप शर्मा, संतन शर्मा, राकेश शर्मा, विश्वरंजन शर्मा, दीपक शर्मा, पिन्टू शर्मा, परमेश्वर शर्मा, श्रीकान्त शर्मा, रमेश शर्मा, अजीत शर्मा, लक्ष्मण राणा, कृष्णा शर्मा, सुरेश शर्मा, रंजीत विश्वकर्मा, शिव किशोर शर्मा एवं अन्य व्यक्तियों का सहयोग तन मन धन से रहा।

-रंजीत विश्वकर्मा

शिक्षा की बेहतरी के लिये वृहद सुधार की जरूरत

अरविन्द विश्वकर्मा
अध्यक्ष
राजनारायण सर्वजन उत्थान सेवा संस्थान
सम्पर्क सूत्र- 9451151234

देश में वर्तमान शिक्षा की जो दुर्गति हो रही है, ऐसा कभी नहीं रहा होगा। इसे बेरोजगारी की मार कहें या विकास की अंधी चाहत। एक नौनिहाल एक ही दिन में दो बार स्कूल जाता है। हर अभिभावक चाहता है कि हमारा बच्चा ज्यादा से ज्यादा समय स्कूल में दे और वह पूर्ण रूप से पारंगत हो जाए। लेकिन विकास की इस अंधी दौड़ में हम दोस्तों के साथ विचार शेयर करने का हक छीन रहे हैं। छीन रहे हैं तो बुजुर्गों का अनुभव व आशीर्वाद, छीन रहे हैं तो वह भौतिक सुख, जो खेलने कूदने के बहाने बाहर निकलने और उछलकूद व धमाचौकड़ी मचाने से मिलता था।

आज लगभग हर बच्चा किताब में इस कदर डूबा रहता है कि सूर्योदय और सूर्यास्त का पता केवल मोबाइल या घड़ी की टिकटिकी से चलता है। उसके बाद जो समय बचता है वह मोबाइल में उंगलियां फेरते ही गुजर जाता है। ऐसा नहीं है कि सरकारी व्यवस्था या हमारा तंत्र ऐसा चाहता है कि कोई बच्चा दो बार स्कूल जाए। सरकारी उदासीनता और बेरोजगारी इसमें चार चांद लगाती रहती है। ऐसा नहीं है कि स्कूलों में पढ़ाने वाले अध्यापक कम योग्य हैं या नहीं पढ़ाते, किंतु दूसरे स्कूल जाना ज्ञान की चाहत नहीं फैशन में शुमार हो चुका है। पूर्व काल में यह व्यवस्था ऐसी थी कि किसी बच्चे को किसी विषय में या कहीं समस्या होती थी तो वह पास-पड़ोस

"आज लगभग हर बच्चा किताब में इस कदर डूबा रहता है कि सूर्योदय और सूर्यास्त का पता केवल मोबाइल या घड़ी की टिकटिकी से चलता है। उसके बाद जो समय बचता है वह मोबाइल में उंगलियां फेरते ही गुजर जाता है।"

वालों से, किसी दुकान पर बैठे लोगों से या गलियों से गुजरते हुए अध्यापकों से ही दो मिनट का समय लेकर समस्या का निदान कर लेता था। इसके साथ यह भी था कि वे लोग खुशी-खुशी ऐसा करने के लिए तैयार भी होते थे। किसी के पास समय का अभाव नहीं होता था।

आज ऐसा नहीं कि लोगों के पास समय का अभाव है, किंतु विकास को संस्कारों व सम्मान के बदले आर्थिक सक्षमता से जोड़ दिया गया है। ज्यादा से ज्यादा धन की चाहत में कुछ शिक्षक तो अधिकांश बेरोजगार कोचिंग रूपी दूसरे स्कूल की मण्डी सजाये बैठे रहते हैं। वे कुछ ही घंटों में स्कूल से ज्यादा देने का ठेका ले लेते हैं। यहां यह समझना होगा कि कोचिंग वह विधा है जिसमें विशेष सीख या समझने की दक्षता प्रदान की जाती है। ऐसी दक्षता कम से कम स्कूलों की पढ़ाई की पुनरावृति की नहीं हो सकती। कोचिंग संस्थानों में वह कोचिंग संस्थान जो विशेष कौशल प्रदान करने के लिए खुले हैं। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए या खेल की विधा को निखारने के लिए या किसी विशेष विषय को पढ़ाने के लिए तो उनका औचित्य समझ में आता है। वह कोचिंग संस्थान जहां पर पूर्णरूपेण वही स्कूली पढ़ाई दुबारा रिपीट की जाती है। वह केवल अभिभावकों की संतुष्टि, बच्चों को बेवकूफ बनाने व बेरोजगारों द्वारा धन अर्जन का माध्यम ही है और कुछ नहीं। यदि किसी बच्चे को किसी विषय में समस्या है तो वह उस विषय की पढ़ाई के लिए कोचिंग का सहारा ले सकता है। ऐसी समस्या निदान के प्रयास को सीखने की ललक कहेंगे, किंतु कुकुरमुत्ते की तरह खुले हुए कोचिंग संस्थानों में सभी विषय पढ़ाए जाते हैं। बच्चा व अभिभावक ऐसे संस्थान ज्वाइन करना सौभाग्य की बात समझते हैं। ऐसी विधा पर आज अंकुश लगाने की आवश्यकता है जो स्कूल के दूसरे रूप में परिवर्तित हो चुके हैं। जहां तक बेरोजगारों के द्वारा धन अर्जन की बात है तो वह किसी विषय विशेष में ही पारंगत होते हैं।

....शेष पृष्ठ 22 पर

पति की बीमारी से हारी नहीं, बल्कि आगे बढ़ाया लौह शिल्प का पेशा

कोंडागांव/बिलासपुर। लोहार का काम करते हुए किसी तरह परिवार की गाड़ी खींच रहे जयलाल बघेल बीमार हुए तो लगा परिवार सड़क पर आ जाएगा। पर बीमार पति की सेवा करते हुए उसकी पत्नी पति के काम को ही आगे बढ़ाते हुए लौह शिल्प में पारंगत हो गई।

अब वह पति का इलाज कराने के साथ तीन बच्चों को भी पढ़ा रही है। सावित्री बघेल लौह शिल्प लेकर दिल्ली के प्रगति मैदान में 3 बार, भोपाल में 4 बार और भुवनेश्वर में 2 बार शिल्पकारों का प्रतिनिधित्व कर चुकी है। 2016 में सावित्री राष्ट्रीय ट्राइबल उत्सव में सम्मानित हो चुकी है। इनकी कलाकृतियां इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में रखी हुई हैं।

सावित्री के ससुर चमरुराम बघेल को राष्ट्रीय स्तर पर 'तुलसी सम्मान' मिल चुका है। उनके साथ वह खदानों में पत्थरों से लोहा निकालने जाती थी। यहीं से कलाकृतियां बनाने का सपना उसने मन में पाला और उसे अब सार्थक कर रही है।

जयलाल बघेल किसानों के लिए हल से लेकर हंसिया, फावड़ा, गैंती, टंगिया और इसी तरह के औजार बनाया करता था। एक बार तबियत बिगड़ी तो फिर खाट से उठ ही नहीं पाया। पत्नी सावित्री बघेल के तीन बच्चों में पुत्र12वीं व 10वीं में और पुत्री भी 10वीं में पढ़ रही है। सावित्री अब महिलाओं को प्रशिक्षित करने में भी जुटी हुई है। अपने साथ वह गीता, ललिता, ममता, अंजू, दीक्षा, पारो व तुलसा को भी लौह शिल्पकला के गुर सिखा रही है।

सावित्री बघेल के अनुसार देश के बड़े शहरों में लोहे के दिये, चौखट, खिड़की की जाली, कैंडल स्टैण्ड और फोटो फ्रेम की मांग ज्यादा है। इसे तैयार करने में काफी समय और मेहनत लगती है उस अनुपात मेहनताना नही मिल पाता।

....पृष्ठ 21 का शेष

अतः सरकार को स्कूल स्तर की सभी कोचिंग को केवल विषयवार ही मान्यता देनी चाहिए। ऐसी मान्यता से सरकार को कोचिंग से मिलने वाली मामूली रजिस्ट्रेशन शुल्क में वृद्धि होगी। किसी भी विषय के दक्ष लोग स्वयं के विषय में आवश्यकतानुसार बच्चों को पढ़ा कर धन अर्जन भी कर लेंगे। ऐसे में बच्चे व अभिभावक भागदौड़ से बचने के लिए उसी विषय को पढ़ना चाहेंगे जिसमें उन्हें नितांत आवश्यकता होगी। इस प्रकार बच्चों का समय बचेगा व घर के बुजुर्गों के साथ, दोस्तों के साथ तथा खेल मैदान पर कुछ समय बिता सकेंगे। उनका बचपन समाप्त नहीं होगा। आज बच्चों को विषय ज्ञान के अतिरिक्त हमें वह सब सीख देने की जरूरत है, जो बचपन में ही दी जा सकती है। सभी को यह समझना होगा कि समय ही सबसे बड़ी पूंजी होती है। यदि बच्चों का समय हम बचा सकते हैं तो उन्हें भविष्य का सब कुछ देने में सफल हो जाएंगे। अतः स्कूली स्तर की सभी विषयों की पढ़ाई कराने वाली कोचिंग संस्थानों को बंद करना चाहिए तथा विषयवार को ही स्वीकार करना चाहिए।

मुंबईः विजयदशमी के पावन अवसर पर लोखण्डवाला काम्प्लेक्स, कांदिवली पूर्व मुंबई में 'श्री विश्वकर्मण्ये चौक' का उद्घघाटन हुआ। लंबे समय से लंबित यह चौक विश्वकर्मा समाज के सम्मान से जुड़ा हुआ मुद्दा था जो विजयदशमी के शुभ दिन पर पूर्ण हुआ। चौक के उद्घघाटन कार्यक्रम में उत्तर मुंबई के सांसद गोपाल शेट्टी, कांदिवली पूर्व के विधायक अतुल भातखलकर, ठाकुर एजुकेशन ट्रस्ट के प्रमुख ठा0 जितेन्द्र सिंह एवं स्थानीय नगरसेविका सौ0 सुरेखा पाटील के साथ विश्वकर्मा समाज के लोग भारी संख्या में उपस्थित हुए।
मुंबई जैसे महानगर में भगवान विश्वकर्मा के नाम से यह स्थान बहुत प्रसिद्ध होने वाला है जो विश्वकर्मा समाज के लिए गर्व का विषय है।

बीते 2 अक्टूबर को गांधी जयन्ती के मौके पर ककुहांस विश्वकर्मा मंदिर कमेटी, मकबूलगंज, लखनऊ के अध्यक्ष राम कैलाश शर्मा की अगुवाई में सफाई अभियान चलाया गया। अभियान में मन्दिर कमेटी के सभी सदस्यों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

श्री विश्वकर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट (रेड ब्रिगेड) नाशिक द्वारा छठ पूजा के पश्चात पंचवटी नाशिक पर स्वच्छता अभियान के अंतर्गत रामकुण्ड/सीताकुण्ड/लक्ष्मणकुण्ड पर साफ-सफाई की गई।

विश्वकर्मा समाज युवक-युवती परिचय सम्मेलन सम्पन्न

उज्जैन। विश्व निर्माणकर्ता सेवा संस्थान के बैनर तले प्रथम विश्वकर्मा समाज का विशाल युवक-युवती परिचय सम्मेलन अवंतिकापुरी महाकाल कि नगरी उज्जैन में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में देश के कोने-कोने से आये समाज बंधुओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

आयोजन की सफलता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि शहर की सबसे विशाल जाट समाज धर्मशाला भी छोटी पड़ती दिखाई दी, जिसमें 2000 से ऊपर समाजबंधुओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

आयोजन की शुरूआत प्रातः 10 बजे हुई जिसमें स्थानीय 5 शाखाओं के सभी समाजाध्यक्ष एवं आयोजन समिति के सदस्यों द्वारा भगवान विश्वकर्मा जी के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर उनकी वंदना की गई। उसके पश्चात आगन्तुक अतिथियों का पुष्पहार से स्वागत कर समिति द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'प्रयत्न' का विमोचन किया गया। पत्रिका में 250 प्रविष्ठियों को जगह दी गयी थी। आयोजन में आये सभी प्रतिभागियों ने मंच से बढ़-चढ़ कर अपना पूर्ण परिचय दिया जो सिलसिला 1 बजे तक चला। परिचय कार्यक्रम समापन के बाद समाजबंधुओं ने सहभोज कर आयोजन को आगे बढ़ाया।

सहभोज में समाजबंधुओं के लिए भोजन एवं फलाहार की व्यवस्था समिति द्वारा की गई थी। इस आयोजन का मुख्य आकर्षण यह था कि समिति द्वारा पत्रिका मिलान के लिए ब्राह्मण देवता को भी बैठाया गया था जिनके माध्यम से कई समाजबंधुओं ने अपने बालक-बालिकाओं की जन्मपत्रिका मिलान करवाकर रिश्ते की बात तय किये।

इस आयोजन को सफल बनाने के लिए विश्व निर्माणकर्ता सेवा संस्थान के सभी पदाधिकारी एवं स्थानीय समितियां विगत 3 महीनों से कठोर परिश्रम कर रही थी। इस आयोजन को सफल बनाने में स्थानीय रूप से रमेशचंद्र शर्मा एडवोकेट, जगदीश पांचाल, विजय शर्मा, रमेशचंद्र मेवाड़ा, पुरषोत्तम बड़ेलवा, मोहनलाल लोहार, जगदीश चंद्र (घोड़ी वाले), दुर्गाप्रसाद धनेजा, जवाहरलाल जांगिड़, अशोक शर्मा, रामप्रसाद सुनेरिया, पुरषोत्तम हजारिया एवं हेमंत पांचाल का विशेष सहयोग रहा।

मंच का संचालन अशोक झाला एवं विश्व निर्माणकर्ता सेवा संस्थान के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शिवराज ओझा, राष्ट्रीय सचिव दयाल विश्वकर्मा ने किया। आयोजन को सफल बनाने में सहयोगी अन्य शहरों की समितियों एवं प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी सभी समाजबंधुओं का आभार रमेशचद्र शर्मा एडवोकेट एवं संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष मुकेश विश्वकर्मा, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सिद्धनाथ कारपेंटर कार्यकारिणी सदस्य राजेन्द्र कारपेंटर, प्रवीण सुथार व हेमंत शर्मा ने माना।

प्राचीन काल के विश्वकर्मा इन्जीनियर अब खा रहे ठोकर

आज के दौर में जहा जिन्दगी जीने का अंदाज बदल गया है, वहीं प्राचीन काल से रहे इन्जीनियरों को आज अपनी पहचान बतानी पड़ती है, जो प्राचीन काल में सभी देवी-देवताओ का अस्त्र-शस्त्र और नगर को बनाने का काम किया करते थे। आज उन्हें तुच्छ जातियों का माना जाता है।

आखिर इन बदलाव का क्या कारण है? कि जिस विश्वकर्मा को स्वयं भगवान पूजते थे, आज उन्हें तुच्छ जाती में बाट दिया गया है? आखिर इन्हें बाटने का क्या कारण है? आदि काल से चले आ रहे इस कृत्य को करने वालो का पहचान क्यों मिटाया जा रहा है? अगर विश्वकर्मा वंशजो का पहचान मिटाना है तो क्यों ना उनके द्वारा निर्माण किये गए वस्तुओं का लोग निषेध करें, लेकिन यह नामुमकिन है। तो क्यों चन्द दिनों से आये हुए लोगों को क्या हक है कि हमारे विश्वकर्मा वंशजो को इस तरह परेशान किया जा रहा है।

इस तथ्य पर सवाल उठता है कि अगर मोदी सरकार के उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री योगी को कोई हक नहीं है कि भगवान विश्वकर्मा के पूजा दिवस अवकाश को रद्द करने का, अगर योगी सरकार आने वाले दिनों में इस अवकाश को बहाल नहीं करती है तो हमारी एक मांग है योगी सरकार से कि भगवान विश्वकर्मा द्वारा निर्माण किये गए सभी चीजों का त्याग करें। क्या इसका कारण यह है कि भारत में लकड़ी का काम करने वाले लोगों को विश्वकर्मा या 'काष्ठकार' (बढ़ई), लोहे का काम करने वाले को विश्वकर्मा या 'लौहकार' (लोहार) कहते हैं। इस आधुनिक समाज के विकास का श्रेय इस जाति को जाता है। इनकी संख्या भारत मे लगभग 12 प्रतिशत के आस-पास है। घर मकान आफिस नयी शोध सभी इसी समाज कि देन है, लेकिन राजनैतिक इच्छा शक्ति के अभाव मे पतन होता गया। यह जाति प्राचीन काल से समाज के प्रमुख अंग रहे हैं। घर की आवश्यक काष्ठ की वस्तुएं विश्वकर्मा समाज के लोगों द्वारा बनाई जाती हैं। विश्वकर्मा एक ऐसा समाज है जो देश के हर प्रदेशों, जिलों, गांव-शहर में बहुसंख्यक जाति के रूप मे निवास करते हैं। इनकी संख्या पूरे भारत में 12 प्रतिशत के आस-पास है। विश्वकर्मा समाज के लोग रोजगार मे विश्वास करते हैं, और अपने साथ अनेकों समाज, समुदाय को भी रोजगार उपलब्ध कराते हैं।

आविष्कारों व रचनाओं का धनी है विश्वकर्मा जाति (समाज) जिनको विश्वकर्मा समाज के नामों से पुकारा जाता है। दुनिया में इस समाज के अविष्कार का ही हर एक आदमी नकल करके ही कला को हासिल करता है। विश्वकर्मा समाज के लोगों और घर में जन्मे बच्चे-बच्चे तक को पैदाइशी इन्जीनियर कहा जाता है। विश्वकर्मा समाज जन्मजात ही अविष्कारक है, 5000 वर्ष पूर्व में यही जाति ब्राहमण होती थी। लेकिन उस समय कुछ शत्रुओ के छल-कपट से इस जाति के साथ बहुत बड़ा धोखा देने के बाद, अत्याचार और नाइंसाफी करके राज्यों से जंगल में रहने को मजबूर कर दिया गया। जिससे बाद में रोजी-रोटी चलाने के लिए जंगलो से लकड़ियों के सहारे अपना जीवन-पोषण करने पर मजबूर हो गये।

इनको अलग-अलग प्रदेशों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। यथा- विश्वकर्मा, लोहार, बढ़ई, शर्मा, मिस्त्री, ठाकुर, राणा, धीमान, जांगिड़, जांगडा, सुथार, झा, ओझा, वत्स, टांक, खाती, रामगढ़िया, तरखान, गज्जर, गौड़, मालवीय, मोहराना, महराना, सुतार आदि।

भारत में वर्णव्यवस्था बहुत प्राचीन काल से चल रही है। अपने कार्य के अनुसार ही जातियों की उत्पत्ति हुई है। लोहे का काम करने वाले लोहार, लकड़ी का काम करने वाले बढ़ई, सोने का काम करने वाले सोनार कहलाये। प्राचीन व्यवस्था के अनुसार जीवन निर्वाह के लिए वार्षिक वृत्ति पाते थे। इनको मजदूरी के रूप में विभिन्न त्योहारों पर भोजन, फसल कटने पर अनाज तथा विशेष अवसरों पर कपड़े तथा अन्य सहायता दी जाती थी। इनका परिवार काम कराने वाले घराने से आजन्म संबंधित रहता था। आवश्यकता पड़ने पर इनके अतिरिक्त कोई और व्यक्ति काम नहीं कर सकता था। पर अब नकद मजदूरी देकर कार्य कराने की प्रथा चल पड़ी है।

यह लोग विश्वकर्मा भगवान की पूजा करते हैं। क्यों कि ये लोग विश्वकर्मा भगवान के वंशज हैं। कहते हैं, ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की तथा विश्वकर्मा ने शिल्पों की। प्राचीन काल में उड़न खटोला, पुष्पक विमान, उड़ने वाला घोड़ा, बाण तथा तरकस और विभिन्न प्रकार के रथ इत्यादि का विवरण मिलता है जिससे पता चलता है कि काष्ठ के कार्य करनेवाले अत्यन्त निपुण थे।

(साभार)

लेखक- चन्द्रभूषण विश्वकर्मा

पर्यटकों को आकर्षित करता है पंचगनी का ठंडा मौसम और जादुई झरने

महाराष्ट्र में वैसे तो कई प्रसिद्ध हिल स्टेशन हैं लेकिन सतारा जिले के पंचगनी की बात ही कुछ और है। यह इलाका कई प्रमुख आवासीय शिक्षण संस्थानों के लिए भी प्रसिद्ध है। पंचगनी की खोज ब्रिटिश लोगों ने की थी और गर्मियों में यह ब्रिटिश लोगों के रुकने का स्थान होता था। यह उल्लेख मिलता है कि 1860 के दशक में जॉन चेस्सों नामक अंग्रेज अधिकारी ने यहां पश्चिमी दुनिया के बहुत सारे पौधों की प्रजातियों को लगाया जिसमें सिल्वर ओक एवं पोइंसेत्टिया प्रमुख हैं। पंचगनी की खासियत यह है कि यहां का मौसम साल भर खुशनुमा रहता है इसलिए यह अंग्रेजों की आरामगाह थी।

पंचगनी का अर्थ है पाँच पहाड़ियाँ। यह क्षेत्र समुद्री सतह से लगभग 1,350 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ का शांत और ठंडा मौसम लगातार गर्म और झुलसे हुए पठार से पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ के पहाड़ जादुई झरनों और सँकरे, छोटी तथा घुमावदार धाराओं से आच्छादित हो जाते हैं।

यदि आप ड्राइव करते हुए यहां आएं तो आपको और मजा आयेगा। अगर आप मुंबई से आ रहे हैं तो मुंबई-पुणे राजमार्ग का उपयोग करने पर जल्दी यहाँ पहुंच सकते हैं। पंचगनी पहाड़ी के नीचे के रास्ते पर है जो सतारा की ओर जाता है। यदि आप बहुत बड़े समूह में यात्रा कर रहे हैं तो यह ठीक रहेगा कि आप पंचगनी-महाबलेश्वर रोड पर अंजुमन-ए-इस्लाम शाला के सामने स्थित बंगले किराये पर ले लें। यहां घूमने

के लिए सबसे सही समय सितंबर से मई तक है जब मानसून धीमा पड़ जाता है। ठंड में पंचगनी का तापमान 12 डिग्री सेल्सियस होता है। जून से सितंबर के भारी वर्षा के दिनों में भी परिवार और पर्यटक यहां आते हैं और इस स्थान के अलौकिक सौंदर्य को देखते ही रह जाते हैं।

पंचगनी सहयाद्री पर्वत श्रृंखला के पाँच पहाड़ियों के मध्य में है और इसके चारों ओर पांच गांव- दंदेघर, खिंगर, गोद्वाली, अमरल एवं तैघाट हैं भी बसे हैं। कृष्णा नदी यहाँ पास से ही बहती है एवं इस पर एक बांध भी बनाया गया है।

रहने की जगह- पंचगनी कास पठार से लगभग एक घंटे की ड्राइव पर है। यह पुणे से दो घंटे की दूरी पर है। गोवा से आ रहे हैं तो यहां जरूर विश्राम करें। यहाँ रहने के लिए कई होटल, घर और कैम्प इत्यादि हैं।

मौसम- पंचगनी का तापमान सर्दियों के दौरान 12 डिग्री सेल्सियस के आसपास होता है और कभी कभी गर्मियों के दौरान 34 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचता है।

Vishwakarma Furniture Mart

Manufacturers, Wholesaler & Retailer Of All Kinds Of Artistic Wooden Furniture

Mr. R.S. Vishwakarma
Mob.-9810026510

WOOD WORTH

Office :
A-146, W.H.S, Timber Market,
Kirti Nagar, New Delhi-110015
+91-11-41420356(2356), +91-11-25438140

Mfg Of All Kinds Of Quality Wooden Furniture

इण्डिया की डिट्टो बनना चाहती हैं इंदौर की मुस्कान

इंदौर। जिस उम्र में बच्चे पढ़ाई और खेलकूद के आगे नहीं सोच पाते हैं उस उम्र में मुस्कान दिन-रात मेहनत कर न सिर्फ अपने परिवार, बल्कि पूरे शहर का नाम रोशन कर रही है। 12 साल की उम्र में सोनी टीवी के सुपर डांस 2 के चैप्टर 2 में अपने जबरदस्त परफॉर्मेंस से सबका दिल जीत चुकी मुस्कान शर्मा दो महीने बाद घर वापस आई। मुस्कान ने कहा मेरे मम्मी पापा बचपन से मुझे टीवी पर देखना चाहते थे और मैं बहुत खुश हूं कि उनका यह सपना सच कर सकी।

डिट्टो का नाम बहुत कम लोगों ने सुना होगा, लेकिन मुस्कान इसी नाम से मशहूर होना चाहती है। डिट्टो का असली नाम कर्टनी निकोल कैली है जो एक विश्व प्रसिद्ध रोबोटिक डांसर है। यूट्यूब पर उनके डांस देखकर मुस्कान काफी कुछ सीखती हैं। मुस्कान के डांस गुरु पॉल मार्शल केंडोज पॉल ने कहा कि मुझे भी बचपन से डांस का बहुत शौक था, लेकिन पैसे की कमी के चलते कभी कोई क्लास जॉइन नहीं कर पाया। टीवी पर देखकर और दूसरों को ओब्जर्व कर खुद से ही डांस की बारीकियां सीखीं।

पॉल ने कहा कि रीएलिटी शो प्रतिभाशाली बच्चों को आगे बढ़ाने का बेहतरीन माध्यम है। इससे पैरेंट्स का भी माइंड सेट चेंज हुआ है और वे भी समझने लगे हैं कि बच्चों के लिए सिर्फ साइंस, मैथ्स पढ़कर डॉक्टर, इंजीनियर बनना ही सब कुछ नहीं है। वे कला के इन क्षेत्रों में भी काफी आगे जा सकते हैं। पॉल ने बताया कि वे आगे जाकर डायरेक्टर बनकर अच्छी फिल्में बनाना चाहते हैं।

उन्होंने बताया कि आज भी उनका पहला प्यार पेंटिंग ही है और वे एक आर्ट गैलरी खोलने का सपना देखते हैं। मुस्कान ने बताया कि उन्होंने तीन साल की उम्र से ही डांस सीखना शुरू कर दिया था और अपना पहला स्टेज परफॉर्मेंस पांच साल की उम्र में दिया। मुस्कान की मम्मी भी डांस टीचर हैं। उन्होंने कहा कि मुस्कान हर दिन सात से आठ घंटे डांस की प्रैक्टिस करती है।

खुशियां कम और
अरमान बहुत है।
जिसे भी देखो,
परेशान बहुत है।।
करीब से देखा तो,
निकला रेत का घर ।
मगर दूर से इसकी,
शान बहुत है।।

कहते हैं सच का,
कोई मुकाबला नहीं ।
मगर आज झूठ की,
पहचान बहुत है ।।
मुश्किल से मिलता है,
शहर में आदमी ।
यूं तो कहने को,
इन्सान बहुत हैं ।।

-अवधेश विश्वकर्मा

Living Style Furniture

Deals in: Home & Office Furniture , Modular Kitchen

Authorised Dealer:- ZUARI FURNITURE Kosta Peps Stellar

Raebareli Road –Mob:- 9129084999 * Alambagh:- 9129083999

थोम्सो 2017 में छाया हिसार के दिनेश कुमार 'डीजे' का हुनर

हिसार। आईआईटी रुड़की के सुप्रसिद्ध वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव थोम्सो में हिसार जिले के गाँव बाड़ोपट्टी निवासी दिनेश कुमार 'डीजे' ने अपने हुनर से सबका दिल और तीन अवॉर्ड जीते हैं। थोम्सो में भारत के विभिन्न महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के तकरीबन चालीस हजार युवाओं ने भाग लिया था। दिनेश ने थोम्सो की सबसे प्रतिष्ठित स्पर्धा 'मिस्टर एंड मिस थोम्सो' में फर्स्ट रनर अप का खिताब जीता और साथ में ही ऑनलाइन 'मिस्टर थोम्सो' का टाइटल भी जीता। इसके अलावा एम टीवी के शो रोडिज की तर्ज की स्पर्धा सिंगर में दूसरा स्थान प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में फिल्म अभिनेता फरहान अख़्तर, गायक न्यूक्लेया, मिस इंडिया रनर अप पंखुड़ी गिडवाणी, फैशन मॉडल प्रणति राय प्रकाश, आर0जे0 नावेद, आर0जे0 अभिनव चाँद आदि अनेक सुप्रसिद्ध लोग उपस्थित रहे।

दिनेश ने मॉडलिंग स्पर्धा 'मिस्टर एंड मिस थोम्सो' के टेलेन्ट राउण्ड में स्वतन्त्रता सेनानी चंद्र शेखर आजाद के जीवन के एक वृतांत को डांस, ड्रामा, आर्टिस्टिक योगा और एक खास तौर पर तैयार किए हुये वीडियो के माध्यम से दिखाकर पाश्चात्य संस्कृति के माहौल को देशभक्ति से ओतप्रोत कर दिया। साथ ही थोम्सो गॉट टेलेंट स्पर्धा में अपने सैनिक जीवन और पूर्व राष्ट्रपति डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के जीवन से प्रभावित स्वरचित कविताएँ सुनाकर खचाखच भरे सभागार में उपस्थित श्रोताओं को रोमांचित कर दिया। दिनेश के योगगुरू ईश्वर सिंह

आर्य ने बताया कि साँवले रंग और हकलाने के कारण बचपन में बहुत सारे लोग दिनेश का मजाक उड़ाते थे, परन्तु दिनेश ने समय के साथ अपने व्यक्तित्व को निखारकर मॉडलिंग, शैक्षिक और मंच स्पधाओं में अपना एक मुकाम बनाया है।

दिनेश के स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधि के प्राध्यापक बलकार सिंह पूनिया ने बताया कि दिनेश ने 12वीं कक्षा में उत्तीर्ण होने के पश्चात 2006 में भारतीय वायु सेना में सेवा प्रारम्भ की और मिलिट्री सर्विस के दौरान ही उसने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) से समाज कार्य में स्नातक, अन्नामलाई विश्वविद्यालय से योग में स्नातकोत्तर उपाधि पत्र, इग्नू से ही समाज कार्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। इसके साथ में दिनेश ने समाज कार्य में राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) और कनिष्ठ शोध छात्रवृत्ति (जेआरएफ) को दो बार उत्तीर्ण करने वाला हरियाणा में इग्नू का पहला छात्र बनने का गौरव भी प्राप्त किया। प्राध्यापिका अमरजीत कौर के अनुसार संभवतः आईआईएम के प्रतिष्ठित फेलो प्रोग्राम इन मैनेजमेंट (एफपीएम) में चयनित होने वाले वह भारत के इतिहास के पहले इग्नू विद्यार्थी और साथ ही साथ पहले सैन्यकर्मी हैं। दिनेश वर्ष 2016 में भारतीय वायुसेना से सेवानिवृत्त हुए और फिलहाल आईआईटी रुड़की में पीएचडी स्कॉलर के रूप में कार्यरत है। इसके साथ में दिनेश तीन पुस्तक लिख चुके हैं और योग के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी भी हैं। उनकी तीसरी पुस्तक 'प्रेम की पोथी' का विमोचन कारगिल युद्ध के महानायक परम वीर चक्र विजेता सूबेदार योगेन्द्र सिंह यादव ने किया था। इसके साथ वो पिछले दो वर्षों से 'मिशन दोस्त-ए-जहान' नामक संस्था चला रहे हैं, जिसका उद्देश्य प्रेम, शांति और सकारात्मकता का प्रचार-प्रसार करना है।

दिनेश 'डीजे' की असाधारण उपलब्धियों के लिये परम वीर चक्र विजेता सूबेदार योगेंद्र सिंह यादव, भारतीय वायु सेना से राजपाल राठौड़, संदीप, सुभाष चन्द, जल सेना से रॉबिन बरन्याल, संतलाल गम, प्राध्यापक मिथिलेश शर्मा, दयानन्द वत्स, अभिनेता शाहरुख सिद्दीकी, कवि वी0एम0 बेचैन, शोधकर्ता सुदीप्त आनंद, वियतनाम में तैनात योग प्रशिक्षक प्रवीण वर्मा, सोनू सिंह मार, विश्व योग चैम्पियन मुकेश शर्मा, ज्योति शर्मा, गाँव बाड़ोपट्टी की सरपंच मोनिका देवी आदि ने हर्ष जताया है।

रोशनलाल विश्वकर्मा की बनाई मशीन से अब गन्ना लगाना हुआ आसान

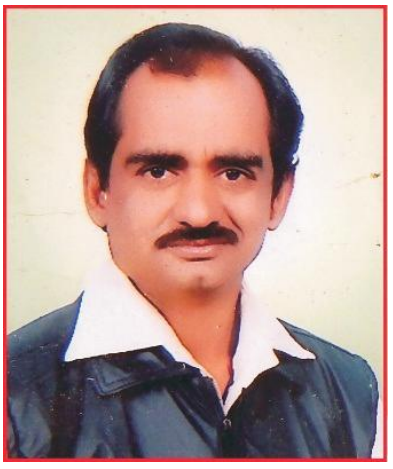

नरसिंहपुर। वो किसान हैं, लेकिन लोग उनको इनोवेटर के तौर पर जानते हैं, वो ज्यादा पढ़े लिखे नहीं हैं लेकिन उन्होने वो ईजाद किया जिसका फायदा आज दुनिया भर के किसान उठा रहे हैं। मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर जिले के मेख गांव में रहने वाले रोशनलाल विश्वकर्मा ने पहले नई विधि से गन्ने की खेती कर उसकी लागत को कम और उपज को बढ़ाने का काम किया, उसके बाद ऐसी मशीन को ईजाद किया जिसका इस्तेमाल गन्ने की 'कलम' बनाने के लिए आज देश में ही नहीं दुनिया के दूसरे देशों में किया जा रहा है।

रोशनलाल विश्वकर्मा ने ग्यारवीं क्लास तक की पढ़ाई पास ही के एक गांव से की। परिवार का पुस्तैनी धंधा खेती था। लिहाजा वो भी इसी काम में जुट गए। खेती के दौरान उन्होने देखा कि गन्ने की खेती में ज्यादा मुनाफा है। लेकिन तब किसानों को गन्ना लगाने में काफी लागत आती थी, इसलिए बड़े किसान ही अपने खेतों में गन्ने की फसल उगाते थे। तब रोशनलाल ने ठाना कि वो भी अपने दो-तीन एकड़ खेत में गन्ने की खेती करेंगे इसके लिए उन्होने नये तरीके से गन्ना लगाने का फैसला लिया।

रोशनलाल का कहना है कि 'मेरे मन में ख्याल आया कि जैसे खेत में आलू लगाते हैं तो क्यों ना वैसे ही गन्ने के टुकड़े लगा कर देखा जाए।' उनकी ये तरकीब काम आ गई और ऐसा उन्होने लगातार 1-2 साल किया। जिसके काफी अच्छे परिणाम सामने आए।

इस तरह उन्होंने कम लागत में ना सिर्फ गन्ने की कलम को तैयार किया बल्कि गन्ने की पैदावार आम उपज के मुकाबले 20 प्रतिशत तक ज्यादा हुई। इतना ही नहीं अब तक 1 एकड़ खेत में 35 से 40 क्विंटल गन्ना रोपना पड़ता था और इसके लिए किसान को 10 से 12 हजार रुपये तक खर्च करने पड़ते थे। ऐसे में छोटा किसान गन्ना नहीं लगा पाता था। लेकिन रोशनलाल की नई तरकीब से 1 एकड़ खेत में केवल 3 से 4 क्विंटल गन्ने की कलम लगाकर अच्छी फसल हासिल होने लगी।

इस तरह ना सिर्फ छोटे किसान भी गन्ना लगा सकते थे बल्कि उसके कई दूसरे फायदे भी नजर आने लगे। जैसे किसान का ट्रांसपोर्टेशन का खर्चा काफी कम हो गया था क्योंकि अब 35 से 40 क्विंटल गन्ना खेत तक ट्रैक्टर ट्रॉली में लाने ले जाने का खर्चा बच गया था। इसके अलावा गन्ने का बीज उपचार भी आसान और सस्ता हो गया था। धीरे-धीरे आसपास के लोग भी इसी विधि से गन्ना लगाने लगे। जिसके बाद अब दूसरे राज्यों में भी इस विधि से गन्ना लगाया जा रहा है।

रोशनलाल यहीं नहीं रूके उन्होने देखा कि हाथ से गन्ने की कलम बनाने का काम काफी मुश्किल है इसलिए उन्होने ऐसी मशीन के बारे में सोचा जिससे ये काम सरल हो जाए। इसके लिए उन्होने कृषि विशेषज्ञों और कृषि विज्ञान केन्द्र की सलाह भी ली। ये खुद ही लोकल वर्कशॉप और टूल फैक्ट्रीज में जाते और मशीन बनाने के लिए जानकारियां इकट्ठा करने लगे। आखिरकार वो 'शुगरकेन बड चिपर' मशीन ईजाद करने में सफल हुए। सबसे पहले उन्होने हाथ से चलाने वाली मशीन को विकसित किया। जिसका वजन केवल साढ़े तीन किलोग्राम के आसपास है और इससे एक घंटे में 3 सौ से 4 सौ गन्ने की कलम बनाई जा सकती है। धीरे धीरे इस मशीन में भी सुधार आता गया और इन्होंने हाथ की जगह पैर से चलने वाली मशीन बनानी शुरू की। जो एक घंटे में 8 सौ गन्ने की कलम बना सकती है।

आज उनकी बनाई मशीनें मध्यप्रदेश में तो बिक ही रही है इसके अलावा ये महाराष्ट्र, यू0पी0, उड़ीसा, कर्नाटक, हरियाणा और दूसरे कई राज्यों में भी बिक रही है। उनकी मशीन की डिमांड ना सिर्फ देश में बल्कि अफ्रीका सहित कई देशों में भी खूब है। आज रोशनलाल की बनाई मशीन के विभिन्न मॉडल 15 सौ रुपये से शुरू होते हैं।

इधर रोशनलाल की बनाई मशीन किसानों के बीच हिट साबित हो रही थी तो दूसरी ओर कई शुगर फैक्ट्री और बड़े फॉर्म हाउस भी उनसे बिजली से चलने वाली मशीन बनाने की मांग करने लगे। जिसके बाद उन्होने बिजली

रोशनलाल विश्वकर्मा के आविष्कार की जानकारी लेते तत्कालीन राष्ट्रपति व केन्द्रीय मन्त्री

से चलने वाली मशीन बनाई जो एक घंटे में दो हजार से ज्यादा गन्ने की कलम बना सकती है। अब इस मशीन का इस्तेमाल गन्ने की नर्सरी बनाने में होने लगा है। इस कारण कई लोगों को रोजगार भी मिलने लगा है।

धुन के पक्के रोशनलाल यहीं नहीं रूके अब उन्होंने ऐसी मशीन को विकसित किया है जिसके इस्तेमाल से आसानी से गन्ने की रोपाई भी की जा सकती है। इस मशीन को ट्रैक्टर के साथ जोड़कर 2-3 घंटे में एक एकड़ खेत में गन्ने की रोपाई की जा सकती है। जहां पहले इस काम के लिए ना सिर्फ काफी वक्त लगता था बल्कि काफी संख्या में मजदूरों की जरूरत भी पड़ती थी। ये मशीन निश्चित दूरी और गहराई पर गन्ने की रोपाई का काम करती है। इसके अलावा खाद भी इसी मशीन के जरिये खेत तक पहुंच जाती है।

रोशनलाल ने इस मशीन की कीमत 1 लाख 20 हजार रुपये तय की है। जिसके बाद बाद विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्र और शुगर मिल ने इस मशीन को खरीदने में दिलचस्पी दिखाई है। साथ ही उन्होंने इस मशीन के पेटेंट के लिए आवेदन किया हुआ है। अपनी उपलब्धियों के बदौलत रोशनलाल ना सिर्फ विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं बल्कि खेती के क्षेत्र में बढ़िया खोज के लिए उनको राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुका है।

पॉलीहाउस में सब्जियां उगाते हैं प्रतीक शर्मा सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचाकर कमाते हैं मुनाफा

होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)। होशंगाबाद के ढाबाकुर्द गाँव के किसान प्रतीक शर्मा जैविक तरीके से खेती करते हैं और यह अपनी फसल को मण्डी में बेचने के बजाय सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचाते हैं, जिससे लागत कम आती है व मुनाफा अच्छा होता है।

प्रतीक शर्मा बताते हैं, 'मैंने 2015 में बैंक की नौकरी छोड़कर पॉलीहाउस में खेती की शुरूआत की थी। फसल तो बहुत अच्छी पैदा हुई लेकिन मण्डी में उसकी कीमत बहुत कम लगाई गई। इससे मुझे इतने भी रुपये नहीं मिले कि पूरी लागत निकल आये, फसल से मुनाफा कमाना तो बहुत बड़ी बात थी। उस समय मैं जो खेती करता था उसमें लागत भी बहुत ज़्यादा थी, दूसरा मैं रसायनिक तरीके से खेती करता था जिससे मिलने वाली फसल सेहत के लिए भी काफी नुकसानदेह होती थी।'

वह कहते हैं, ऐसे में मेरे मन में हमेशा एक अपराधबोध रहता था कि मैं लोगों की सेहत से खिलवाड़ कर रहा हूं। इस पर मैंने काफी विचार किया और फिर कुछ दोस्तों के साथ मिलकर एक टीम बनाई और वर्दा फार्मर्स क्लब की शुरूआत की। इसके बाद हमने कई सब्जियां उगाईं और उनको उगाने में काफी कम लागत लगाई, इसके लिए हमने जैविक तरीके से खेती की और उन्हें सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचाया। वह बताते हैं कि उनके पास साढ़े पांच एकड़ जमीन है जिसमें वो 12-13 सब्जियां उगाते हैं। इससे पहले प्रतीक ने जैविक खेती साकेत संस्था से सीखी।

बताया कि पिछले साल हमने नवंबर में ये काम शुरू किया था। अब 15 किसान हैं जो हमारी टीम के कोर मेंबर हैं। हमने दो हब्स बनाए हैं जहां सारी सब्जियां इकट्ठी होती हैं और फिर

> "वह बताते हैं कि हमारे खेत में हमने जैविक विधि से जो तोरई उगाई है उनकी लंबाई लगभग साढ़े तीन फुट तक है।"

वहां से उन्हें भोपाल भेजा जाता है। भोपाल में हमारे कलेक्शन सेंटर हैं जहां इनकी छंटाई, बिनाई और पैकेजिंग होती है। इसके बाद व्हॉट्सऐप पर इनकी एक लिस्ट अपडेट होती है। हमारे जो उपभोक्ता हैं वो वहीं उनका ऑर्डर कर देते हैं और वहीं से इनकी होमडिलीवरी की जाती है।

प्रतीक बताते हैं कि हम जैविक विधि से खेती करते हैं और इसके लिए हम खाद भी खुद ही बनाते हैं। फसल नियंत्रण के लिए नीमास्त्रिका, भ्रमास्त्रिका आदि का उपयोग करते हैं। इसके अलावा पोषण और फसल का कीट नियंत्रण हम खुद करते हैं जिससे लागत काफी कम हो गई और हम सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचते हैं। इसलिए हम बाजार के सामान्य दामों में ही अपनी जैविक विधि से तैयार की गई सब्जियां बेच पाते हैं।

प्रतीक शर्मा बताते हैं कि जैविक विधि से खेती करने के कई फायदे हैं एक तो ये कि इससे मिट्टी की सजीवता वापस आ जाती है, दूसरा ये कि इससे तैयार हुई फसल काफी बेहतर होती है। वह बताते हैं कि हमारे खेत में हमने जैविक विधि से जो तोरई उगाई है उनकी लंबाई लगभग साढ़े तीन फुट तक है। इनका स्वाद भी काफी अच्छा होता है।

-कुछ दोहे

राम अवध विश्वकर्मा

जन सेवा में तू लगा, तन-मन-धन दिन रात।
फिर पावेगा सुख बहुत, लाख टके की बात।।
कितना अत्याचार तू, करता है भगवान।
तन को बूढ़ा कर दिया, दिल को रखा जवान।।
ऋतु बसन्त में भी वही, रहा हाल बेहाल।
गंजे-गंजे ही रहे, उगा न सर पे बाल।।
घुप्प अंधेरे में कभी, भटके नहीं समाज।
दीपक जलता रात भर, परमारथ के काज।।
सूरज से लड़ने चला, बादल सीना तान।
तपते सूरज का हुआ, चूर-चूर अभिमान।।
आडम्बरधारी कहें, अपने को विद्वान।
मौसम पर चर्चा करें, मौसम से अनजान।।
वृक्ष लगाये ही नहीं, जंगल दिये उजाड़।
पर्यावरण का संतुलन, हमने दिया बिगाड़।।

बढ़ा प्रदूषण इस तरह, बना गले का फाँस।
धुआँ फेफड़ों में भरा, फूल रही है साँस।।
ठन-ठन मदन गोपाल तुम, नहीं गाँठ में दाम।
रिश्वत के बाजार में, कैसे होगा काम।।
बिना खाद के हो गई, जब फसलें बरबाद।
अमला तब सरकार का, चला बाँटने खाद।।
मित्र बनाओ बाद में, पहले करो विचार।
खरा नहीं होता कभी, हर सिक्का कलदार।।
राजनीति में फंस गई, दीवाली और ईद।
जनता रोये सिर धुने, फोड़े अपनी दीद।।
बाहर से ब्रह्मा दिखें, भीतर से यमराज।
जनता धिक्कारे इन्हें, तबहु न आवै लाज।।
रामराज की कल्पना, कैसे हो साकार।
रामचन्द्र सा है नहीं, राजा का व्यवहार।।

विश्वकर्मा समाज के समाचारों की एकमात्र साप्ताहिक पत्रिका

विश्वकर्मा किरण
(हिन्दी साप्ताहिक)

पाठकों एवं शुभचिन्तकों से अनुरोध

प्रिय बन्धुओं, सादर विश्वकर्माभिवादन!

आप सभी जानते हैं कि ''विश्वकर्मा किरण'' हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका पिछले 18 वर्ष से समाज के अधिकांश समाचारों, विचारों और लेखों के साथ आप सभी के बीच एक पहचान बना चुका है। पत्रिका ने समाज के हर छोटे-बड़े समाचारों, लेखकों के विचार, समाज के कवियों और साहित्यकारों को तवज्जो दिया है। अधिकांश पाठक और शुभचिन्तक यह अच्छी तरह जानते हैं कि समाचारपत्र अथवा पत्रिका का प्रकाशन कार्य बहुत ही कठिन है। प्रकाशन में बहुत खर्च आता है जिसका संकलन बहुत ही कठिनाई से हो पाता है, इन्हीं परिस्थितियों में कभी-कभार प्रकाशन बाधित भी हो जाता है। प्रकाशन बिना आप सभी के सहयोग के नहीं चल सकता। आप सभी से अनुरोध है कि सदस्यता के अलावा भी समय-समय पर यथासम्भव पत्रिका का आर्थिक सहयोग करते रहें जिससे प्रकाशन निर्बाध रूप से चलता रहे।

सहयोग राशि इस खाते में जमा करें-

Account Name	:	VISHWAKARMA KIRAN
Account No.	:	4504002100003269
Bank Name	:	PUNJAB NATIONAL BANK
Branch	:	SHAHGANJ, JAUNPUR (U.P.)
IFSC Code	:	PUNB0450400

Raju Panchal

Managing Director

Mo- 09810594537

Ganga Electronics

(Pvt Ltd)

Manufacturer of:

Sheet Metal Components, Sheet Metal Tools
Turn Components, All Type of Assembly
& Precession Component of Electrical & Mechanical

138, Anand Industrial Estate Mohan Nagar, GAZIABAD (U.P.)

TM VEW Vishwakarma Engineering Works
ALL KIND OF NEW MACHINERY
TEXTILE MACHINES &
ALL VALUE ADDED FABRIC MACHINES MANUFACTURER
BSCIC NABCB ISO 9001 REGISTERED

Vijay R. Mistry
Mob.-9825154496

VISHWAKARMA ENGINEERING WORKS

Shearing Machine

Warr Center Cutting Machin

Warp Butta Cutting Machine

Roll Press Machine

Calendar Machine
& Bags Polish

Five Roll Calendar
& Iron Press Mac

-Office Address-

Plot No.64, Vinayak Chambers, Jawahar Road, Road No.– 4, Udhna Udhyog Nagar, Surat–394210 (Gujarat)
Factory-Plot No.B/1,73-74,Bhagwati Ind. Estate, Nr Navin Flourine Colony, Bhestan, Surat.
PHONE NO. : +91-261-2274380, CELL : +91-9825154496,
e-mail address : vijayr.mistry@yahoo.com website : http://vishwakarmaengineering.com
http://www.vishwakarmaengineeringwork.in/ http://www.vishwakarmaengineeringwork.com/
https://www.youtube.com/channel/UCdpT7D2K_DHwXGYnZ-Qo_Iw